Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

जे दूवण ण ते हि णो णया।
जो विषयों के प्रति नत होते हैं, वे समाधि को नहीं जान पाते।

✽✽✽

आतहितं दुक्खेण लब्भते।
आत्महित की साधना अत्यंत दुर्लभ है।

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 17 • 31 जनवरी - 6 फरवरी, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 29-01-2022 • पेज : 16 • ₹ 10

158वाँ 'वृहद' मर्यादा महोत्सव होगा 'वीरभूमि' बीदासर का 25वाँ मर्यादा महोत्सव

तेरापंथ धर्मसंघ की अक्षुण्णता और अखंडता का मूल स्तंभ है आचार्य भिक्षु द्वारा लिखित मर्यादा पत्र

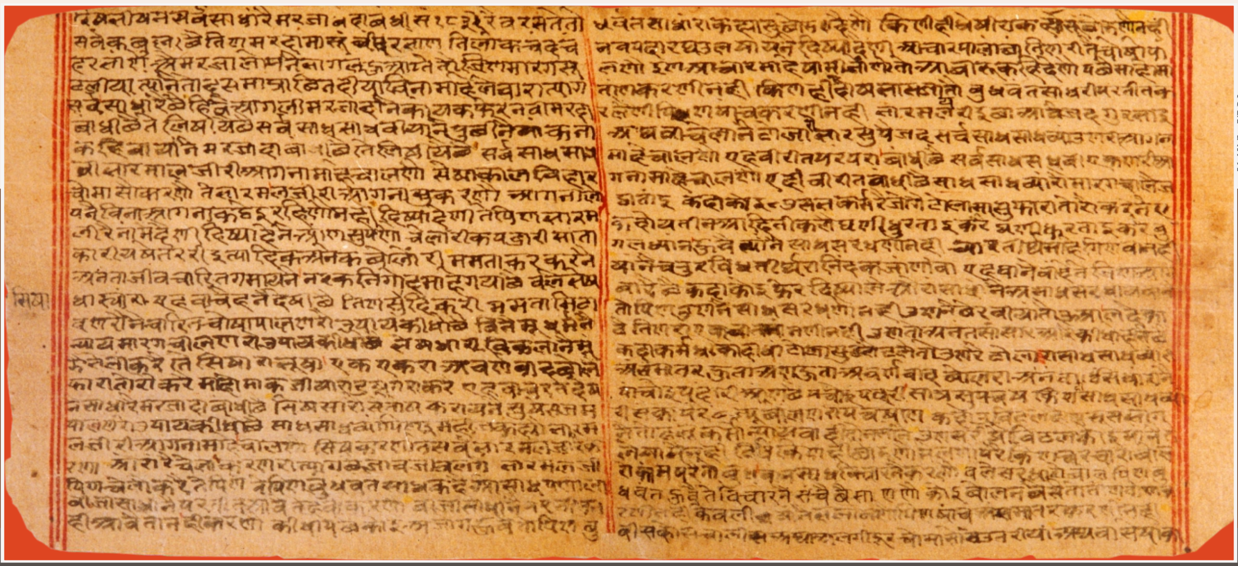

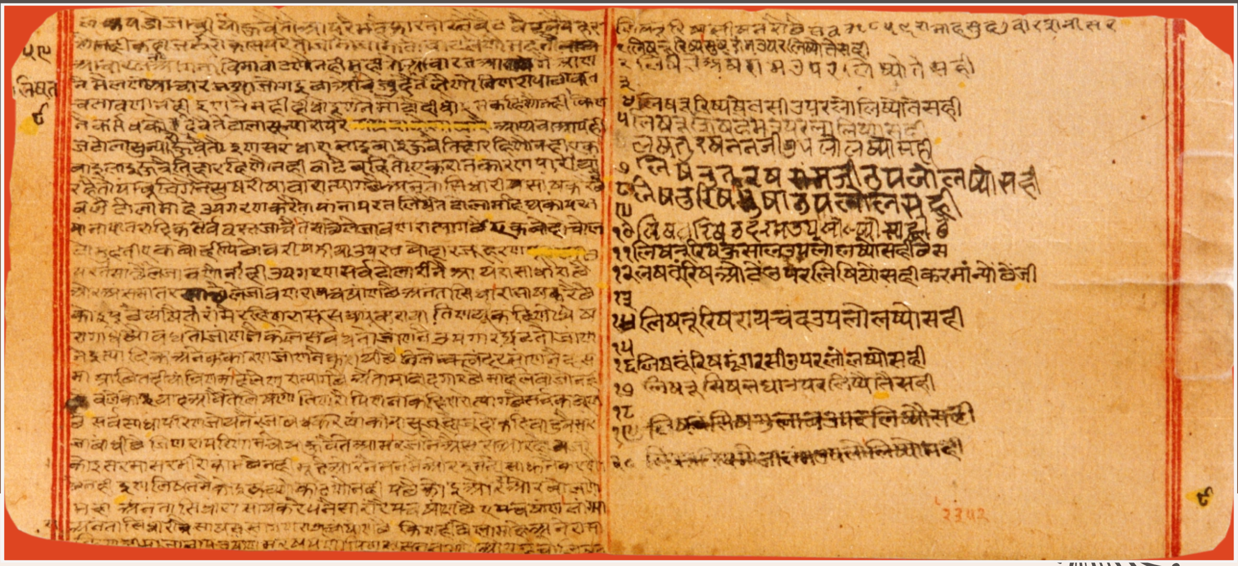

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ एक ऐसा धर्मसंघ है जहाँ मर्यादा और अनुशासन सर्वोपरि है, जहाँ एक गुरु और एक विधान को ही सर्वेसर्वा माना जाता है। आचार्य भिक्षु ने माघ शुक्ल सप्तमी वि०सं० १८५९ को अंतिम लेखपत्र लिखा था। यह लेख पत्र आज भी गण के लिए छत्र बना हुआ है। चतुर्थ आचार्य श्रीमद् जयाचार्य ने इसी को आधार बनाकर माघ शुक्ल सप्तमी को विधिवत मर्यादा महोत्सव मनाना प्रारंभ किया। १५८ वर्षों में केवल एक वर्ष को छोड़कर सभी आचार्यों द्वारा यह निरंतर मनाया जा रहा है। तेरापंथ धर्मसंघ ही एकमात्र धर्मसंघ है जहाँ मर्यादाओं का महोत्सव मनाया जाता है। त्रिदिवसीय आयोजन में पहुँचने के लिए साधु-साध्वियों, श्रावक-श्राविकाओं में उल्लास रहता है। तीनों दिन अलग-अलग व्यवस्थित रूप से कार्यक्रम निर्धारित होते हैं। संघ के अनुशास्ता द्वारा इस महोत्सव के अवसर पर संघ के नाम उद्बोधन और नवीन घोषणाएँ होती हैं। इसका मुख्य आकर्षण सप्तमी के दिन आचार्यप्रवर द्वारा साधु-साध्वियों के चतुर्मासों की घोषणा करना होता है।

इस बार का मर्यादा महोत्सव अपने आप में विशिष्ट है, क्योंकि आचार्यप्रवर ने इसे वृहद् मर्यादा महोत्सव की संज्ञा प्रदान की है। बीदासर की वीरभूमि में यह पच्चीसवाँ मर्यादा महोत्सव है। १५८ मर्यादा महोत्सव में पच्चीस मर्यादा महोत्सव एक स्थान पर होना वीरभूति की वीरता का द्योतक है। बीदासर निश्चित रूप से पूर्वाचार्यों का प्रिय स्थान रहा होगा, तभी इस क्षेत्र पर इतनी कृपा बरसी है बीदासर के इतिहास को देखें तो यह अपने आप में अनूठा है। थली संभाग में तेरापंथ के पाँव जमाने वाला क्षेत्र बीदासर ही है। इस भूमि पर तेरापंथ के आद्यप्रवर्तक आचार्य भिक्षु का चरण विन्यास विक्रम संवत् १८३७ में हुआ। थली संभाग में प्रथम चतुर्मास तेरापंथ के तृतीय आचार्य रायचंदजी का यहीं पर हुआ। तेरापंथ धर्मसंघ के पंचम आचार्य मघवागणीजी की जन्मभूमि एवं चतुर्थ आचार्य जीतमलजी इसी भूमि पर आचार्य पद पर पदासीन हुए। तेरापंथ धर्मसंघ में पुस्तकों के संघीकरण का सूत्रपात हो या आचार्य भिक्षु चरमोत्सव मनाने का शुभारंभ हो ये श्रेय भी बीदासर को प्राप्त है।

बीदासर ही वह स्थान है जहाँ देवकृत उपसर्ग से धधगते अंगारों की वर्षा होने पर जयाचार्य ने चमत्कारिक 'मुणिन्द मोरा' गीतिका की रचना की और इसके समुच्चारण से उपद्रव शांत हुआ। आज भी इसके संगान से अनेक लोगों को चित्त समाधि मिलती है। तेरापंथ धर्मसंघ की तीन साध्वीप्रमुखाओं की निर्वाण भूमि बीदासर है। इसी धरा पर तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास में प्रथम बार लघुसिंह निष्क्रीडित तप की पाँच परिपाटियाँ विक्रम संवत् १९६६ के चातुर्मास में मुनि अमृतलालजी, साध्वी अणचांजी, साध्वी चांदाजी, साध्वी प्यारांजी, लक्ष्मीबाई सेवगणी द्वारा की गई। दक्षिण यात्रा के पश्चात तेरापंथ के नवमाधिशास्ता आचार्य तुलसी को चतुर्विध धर्मसंघ ने 'युगप्रधान' की उपाधि से इसी धरा पर नवाजा। तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने यहीं पर एक साथ ४३ दीक्षाएँ प्रदान कर नव इतिहास का सृजन किया। तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्यों के २४ चातुर्मास एवं २४ मर्यादा महोत्सव बीदासर की धरती पर संपन्न हो चुके हैं, यह भी अपने आपमें अद्वितीय है। युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी का बीदासर में वृहद मर्यादा महोत्सव तेरापंथ धर्मसंघ में नव इतिहास का सृजन करें, विकास की नई रेखाएँ खींचे। मंगलकामना।

✦ *बाह्य आँखों का महत्त्व है तो भीतरी आँख और भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। साधक को उस आँख के द्वारा स्वयं को देखने का अभ्यास करना चाहिए।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

जैन भगवती दीक्षा समारोह का आयोजन

योग्य गुरु का मिलना शिष्य के लिए सौभाग्य की बात होती है : आचार्यश्री महाश्रमण

जैन विश्व भारती, २४ जनवरी, २०२२

भारतीय ऋषि परंपरा के महान संत, संयम रत्न के प्रदाता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्र में कहा गया है कि जो व्यक्ति अहंकार-गुस्सा आदि कारणों से गुरु के पास विनय का शिक्षण नहीं लेता है, वह अपना विनाश-नुकसान करने वाला बन सकता है, बन जाता है।

गुरु एक ऐसा स्थान है, जहाँ से शिक्षण मिल सकता है। गुरु का एक काम भी है, शिक्षण देना। ज्ञान देना। लौकिक गुरु भी होते हैं तो धर्म गुरु भी होते हैं। योग्य गुरु का मिल जाना भी एक महत्त्वपूर्ण बात होती है। जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ को प्रथम गुरु के रूप में आचार्य भिक्षु प्राप्त हुए थे। आचार्य भिक्षु को भी अनेक अच्छे शिष्य

मिले थे। खेतसीजी जैसे शिष्य को सतयुगी कहा गया है। मुनि टोकरजी, हेमराजजी, भारमलजी स्वामी जैसे शिष्य मिले थे।

कोई-कोई शिष्य ऐसा भी होता है, जो धर्मसंघ में अपने गुरु को भविष्य की चिंता से मुक्त बनाने वाला हो सकता है। गुरु को भावी व्यवस्था के प्रश्न का उत्तर मिल जाता है और व्यवस्थित सारी व्यवस्था हो जाती है, तो आचार्य भविष्य की चिंता से कुछ अंशों में पूर्णतया चिंतायुक्त हो सकते हैं।

हमारे धर्मसंघ में तो आचार्य कुछ अंशों में मुक्त हो जाते हैं, जब योग्य उत्तराधिकारी प्रस्तुत-नियुक्त हो जाता है। आचार्य अनेक कार्यों का दायित्व उसमें सन्निहित कर देते हैं। आचार्य तुलसी युवाचार्य नियुक्त करने के बाद भी कई व्यवस्थाओं से जुड़े रहे। बाद में प्रशासनिक कार्य युवाचार्यजी को सौंप दिए थे। बाद में आचार्य तुलसी तो पदमुक्त भी हो गए थे। गुरुदेव तुलसी ने तो इतना कह दिया था कि तुलसी में महाप्रज्ञ या महाप्रज्ञ में तुलसी को देखो।

आचार्य भिक्षु को भी योग्य शिष्य मिल गया जो उनकी भविष्य की चिंताओं से मुक्त करने वाला था। वे थे—भारमलजी स्वामी मूँहा वाले। वि०सं० १८३२ में आचार्य भिक्षु ने उनको युवाचार्य पद पर घोषित कर दिया था। उत्तराधिकारी नियुक्त करने के बाद धर्मसंघ में आचार्य युवाचार्य की जोड़ी हो जाती है। आचार्य व संघ का कोई भाग्य होता है, तब योग्य शिष्य भी आचार्य रूप में नियुक्त कर दिया जाता है। लगभग यह जोड़ी २८ वर्षों तक विराजमान रही थी।

आचार्य भिक्षु ने भारमलजी स्वामी के लिए फरमाया था कि भारमल तो भागी है। मेरे बाद ये हेमक तैयार हो गया है। जिस मुनि के लिए आचार्य ये शब्द फरमाते हैं, वो मुनि तो मानो धन्य हो जाता है। आचार्य भारमलजी माने आचार्य भिक्षु की छाया की तरह कुछ अंशों में उनके पास रहने वाले थे। शिष्य होना एक बात है, साथ में विनीत हो, चित्त समाधि में निमित्त बनने वाला हो। ज्यादा चित्त समाधि तो वैसे स्वयं के पास है। जीवन में शांति-समाधि रहे।

आचार्य का दायित्व है कि अगली पीढ़ी को तैयार कर दें, सामने प्रस्तुत कर दें। हमारे साध्वीप्रमुखाश्री जी को ५० वर्ष होने जा रहे हैं। प्रशासनिक प्रबंध सेवा देना लाजिम होता है। करने वाले कर सकते हैं। माष कृष्णा त्रयोदशी को हमने साध्वीप्रमुखाजी का अमृत महोत्सव मनाने का तय किया हो। साध्वीप्रमुखा अमृत महोत्सव। वैसे इस प्रसंग से गंगाशहर जुड़ा हुआ है। लाडनूं को अवसर मिल गया है।

साध्वीप्रमुखाश्री जी तो तीसरी पीढ़ी में भी सेवा प्रदान करवा रही हैं। आचार्य के लिए उत्तराधिकारी तो मुख्य बात है ही। पर मैं सोचता हूँ कि आचार्य के लिए यह कार्य होना चाहिए कि कैसे योग्य साध्वीप्रमुखा हो। इसके लिए आचार्य चिंतन रखें कि उसको कैसे तैयार करें।

आज दीक्षा समारोह भी आयोजित है। जैविभा तो तपोवन, आध्यात्मिक भूमि है, जहाँ अध्यात्म की गंगा प्रवाहित होती रहती है। तीन प्रकार के सात व्यक्तियों की दीक्षा होने जा रही है। चार समणियों का श्रेणी आरोहण, दो मुमुक्षु बहनें व एक श्राविका की साध्वी दीक्षा। समणियों व मुमुक्षु बहनों का उत्थान होने जा रहा है।

मुनि कुमारश्रमण जी की संसारपक्षीय माताजी का भी मुनित्व की ओर प्रयाण होना है। योग है, पुरुषार्थ करते-करते पुरुषार्थ सफल हो जाता है। अवस्था प्राप्त है। दीक्षा बचपन, युवावस्था या वृद्धावस्था में भी आ सकती है। दीक्षा के लिए आज्ञा पत्र भी पहुँच चुके हैं। लिखित आज्ञा के साथ मौखिक आज्ञा भी लेना चाहता हूँ। पारिवारिक जनों ने आज्ञा प्रदान की।

पूज्यप्रवर ने मुनि दीक्षा ग्रहण करने वालों से उनकी मानसिक भावना को अवगत किया। उन्हें मुनि जीवन के बारे में सारी बातें बताई। सारी परीक्षाएँ लीं।

दीक्षा संस्कार प्रदान करते हुए परम पावन ने नमोत्थुणं के स्मरण से भगवान महावीर, आचार्य भिक्षु व आचार्य परंपरा व आचार्य तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का स्मरण करते हुए मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी का स्मरण किया। साध्वीप्रमुखाश्री जी का अभिवादन किया।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

नागरिक अभिनंदन समारोह

मोक्ष की साधना के लिए नौ तत्त्वों का ज्ञान अपेक्षित : आचार्यश्री महाश्रमण

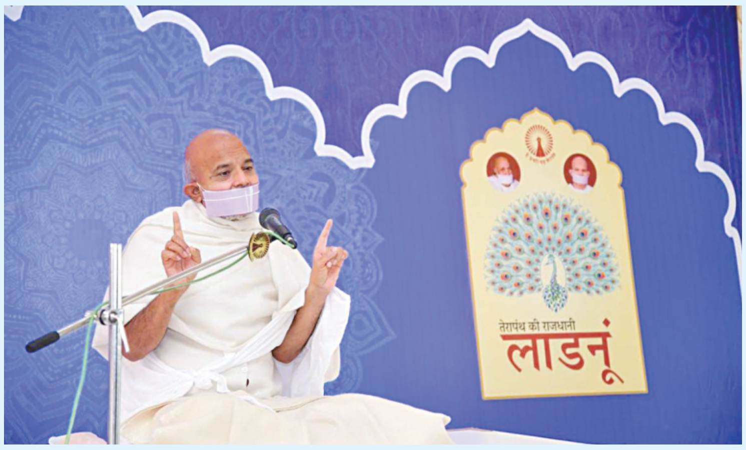

जैन विश्व भारती, १६ जनवरी, २०२२

तेरापंथ धर्मसंघ की राजधानी के नाम से प्रसिद्ध चंदेरी की पावन भूमि में महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी का लाडनूं नगरपालिका द्वारा नागरिक अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। इस समारोह में विभिन्न संस्थाओं एवं संगठनों ने अभिनंदन पत्र समर्पित कर आचार्यप्रवर से आशीर्वाद ग्रहण किया।

मुख्य प्रवचन में आचार्यप्रवर ने मंगल देशना देते हुए फरमाया कि व्यक्ति अगर सोचे कि वह कौन है तो इसका जवाब होगा कि वह आत्मा है, जीव है। पर यह शरीर तो अजीव है। आत्मा को न देखा जा सकता है न स्पर्श किया जा सकता है। इसे छेदा या काटा भी नहीं जा सकता है। आत्मा तो अमूर्त है जीव आत्मा और अजीव शरीर का संयोग कराने वाला तत्त्व बंध कहलाता है। बंध पाप कर्मों का भी हो सकती है और पुण्य कर्मों का भी हो सकता है। पुण्य और पाप कर्मों का बंध होने का कारण आश्रव होता है जो कर्मों को आकर्षित करता है। इसके कारण ही आत्मा और शरीर का संयोग होता है। इन कर्मों से पीछा छुड़ाने का उपाय संवर है। संवर की साधना से कर्मों का बंध नहीं होता है। यानी पुण्य-पाप का बंध नहीं होता है। जितनी मात्रा में संवर होगा उतने ही पाप का बंध रुक जाएगा और पुराने पाप रूपी कर्मों को तोड़ने का उपाय है निर्जरा। निर्जरा से सारे कर्म आत्मा से झड़ जाते हैं। सभी कर्म झड़ जाने पर मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

जैन दर्शन के सिद्धांत जैन दर्शन के स्तंभ के समान : आचार्यश्री महाश्रमण

जैन विश्व भारती, २१ जनवरी, २०२२

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन दर्शन के अनेक सिद्धांत हैं, जो जैनदर्शन के स्तंभ के समान हैं। आत्मवाद जैन दर्शन का एक मजबूत स्तंभ है, जहाँ आत्मा का शाश्वत अस्तित्व प्रगट होता है। शरीर और आत्मा का पार्थक्य सामने आता है। स्थूल शरीर अस्थायी और आत्मा स्थायी है। स्थायी-अस्थायी सापेक्ष बातें हो सकती हैं।

जैन दर्शन नित्यानित्यवाद में विश्वास करता है। केवल नित्य ही ऐसा कोई पदार्थ नहीं और केवल अनित्य ही है, ऐसा भी कोई पदार्थ नहीं। ध्रोव्य उसमें है तो पर्याय भी इसमें होता है। ऐसा कोई द्रव्य नहीं जो पर्यायविहीन या द्रव्य विहीन हो। दोनों का साहचर्य होता है। प्राधान्य और गौणत्व हो सकता है।

जैन दर्शन पदार्थ को नित्यानित्य मानता है। परंतु कहीं नित्यता का प्राधान्य और कहीं अनित्यता का प्राधान्य पदार्थों में देखा-जाना या विवक्षा की जा सकती है। आत्मा के जो असंख्य प्रदेश हैं, उनमें एक भी प्रदेश टूट नहीं सकता। आत्मा अछेद्य, अदाह्य, अंकलेश है, अशौष्य है। इसलिए आत्मा की शाश्वतता है कि आत्मा का एक भी प्रदेश कभी न तो अलग हुआ है, न कभी होगा।

आत्मवाद यानी आत्मा त्रैकालिक है। वो शाश्वत के रूप में त्रैकालिक है। आत्मा फैले तो पूरे लोकाकाश के प्रदेश पर अवगाढ़ हो जाए। इतनी विराट हो जाती है। आत्मा के उतने ही प्रदेश हैं जितने ही लोकाकाश के प्रदेश हैं। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय और एक जीव के प्रदेश तुल्य होते हैं।

जैन दर्शन में आत्मवाद के सिवाय, कर्मवाद का सिद्धांत भी बताया है। आत्मा कैसे कर्म बंध करती है, संक्रमण करती है, आदि-आदि कितने नियम-व्यवस्थाएँ कर्मवाद की होती है। कर्मवाद का विराट ज्ञान ग्रंथों में प्राप्त है। पुनर्जन्म भी कर्मवाद से जुड़ा है। व्यापक विषय व जैन दर्शन का व्यापक दूसरा स्तंभ कर्मवाद है। जैन दर्शन में काफी विस्तृत वर्णन कर्मवाद का प्राप्त होता है। अन्य दर्शनों में भी कर्मवाद का वर्णन मिलता है।

जैन दर्शन का एक वाद है—लोकवाद। ये ब्रह्मांड, ये दुनिया क्या है, कैसी है, छः द्रव्य क्या हैं? पदार्थ नौ हैं। छः में नौ का समावेश किया जा सकता है। पर दोनों वर्गीकरण का अलग-अलग आधार है। विश्व क्या है, इसका जवाब देने के लिए सत्-द्रव्यपाद की उत्पत्ति हुई है। अस्तित्ववाद को भी छः द्रव्यों से बताया जा सकता है। आत्मवाद को समझने व क्या करणीय क्या हेय, गेय, उपादेय यह जानने के लिए नौ तत्त्वों को समझो तो मोक्ष की दिशा में, आत्मकल्याण की दिशा में आगे बढ़ सकते हो। हमारी साधना के लिए उपयोगी क्या है, तो इन नौ तत्त्वों को बताएँ।

पूज्य गुरुदेव तुलसी के समय आगम संपादन का कार्य शुरू हुआ था। आचार्य महाप्रज्ञ जी तो आगम संपादन में रीढ़ की हड्डी के समान थे। उनका कितना श्रम-समय लगा है। उनकी प्रतिभा-मनीषा का उपयोग हुआ है। आचार्य महाप्रज्ञ जी के समय आत्मवाद, कर्मवाद, लोकवाद पर ग्रंथ लिखने की योजना बनी थी, वो ग्रंथ बाद में सामने भी आया है। आ भी रहे हैं।

आगम के प्रकाशन तो प्रायः सभी का हो चुका है। कुछ बाकी है, वो निकट भविष्य में आने वाले हैं। जैविभा तो ज्ञान का स्थान है। यह तो ज्ञानाराधना परिसर है। जहाँ रहे वहीं काम करें। कार्य आगे बढ़ते रहें। जैन दर्शन के ये आत्मवाद, कर्मवाद, लोकवाद और क्रियावाद सिद्धांत हैं। स्वाध्यायशील साधु-साध्वियाँ, समणियाँ हैं, जितना अनुकूल टाइम हो आगमों का स्वाध्याय करते हैं। आगम को पढ़ते-पढ़ते अच्छी खुराक मिल सकती है। ज्ञान बढ़ता है। यथार्थ का साक्षात्कार भी हो सकता है। सभी स्वाध्याय करने का प्रयास करते रहें।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

योग्य गुरु का मिलना शिष्य के लिए सौभाग्य की...

(पृष्ठ २ का शेष)

धम्मो मंगल मुक्किट्ठं---की आर्षवाणी से सातों दीक्षार्थियों को तीन करण—तीन योग से सर्व सावद्य योग का आजीवन सामायिक पाठ से प्रत्याख्यान करवाया। नव दीक्षित साध्वियों ने पूज्यप्रवर की वंदना की। पूज्यप्रवर ने आर्षवाणी से अतीत की आलोचना करवाई। एक लोगस्स का ध्यान करवाया।

साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने समणीजी, श्राविकाजी व मुमुक्षु बहनों का केश-लोचन किया। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि केश-लोच की प्राचीन परंपरा है। शिष्य की चोटी गुरु के हाथ में आ जाती है। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि सूरजबाई का केश लोचन एक विरल घटना है। साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने खड़े-खड़े ही उनको बैठाकर उनका केश लोच किया है।

आज परम पूज्य गुरुदेव तुलसी के द्वारा मंत्री मुनि के रूप में स्थापित मंत्री मुनि मगनलालजी स्वामी का आज प्रयाण का दिन है। वि०सं० २०१६ में मंत्री मुनि का सरदारशहर में प्रयाण हुआ था। आज ६२ वर्ष पूरे हो गए। गुरुदेव तुलसी को अपने मंत्री मुनि के अंत समय में मिलने का मौका नहीं मिला तो मुझे भी अपने मंत्री मुनि के अंत समय में उनके दर्शन का मौका नहीं मिला। मैं मंत्री मुनि मगनलालजी स्वामी को भी सम्मान के साथ वंदन-स्मरण करता हूँ। हमारे धर्मसंघ के प्रथम मंत्री मुनि थे।

रजोहरण एवं नामकरण संस्कार

पूज्यप्रवर ने आगम वाणी का उच्चारण किया एवं साध्वीप्रमुखाश्रजी ने सातों नव दीक्षित साध्वियों को रजोहरण प्रदान करवाया। पूज्यप्रवर ने उनके ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप में आगे बढ़ने की मंगलकामना की।

पूज्यप्रवर ने नामकरण संस्कार करते हुए नए नामों की घोषणा की।

समणी रुचिप्रज्ञा	–	**साध्वी रुचिप्रभा**
समणी प्रशांतप्रज्ञा	–	**साध्वी परिधिप्रभा**
समणी मनस्वीप्रज्ञा	–	**साध्वी मस्कप्रभा**
समणी शरदप्रज्ञा	–	**साध्वी सिद्धांतप्रभा**
सुरजबाई	–	**साध्वी सुधर्माप्रभा**
मुमुक्षु चेतना	–	**साध्वी चिरागप्रभा**
मुमुक्षु सुरभि	–	**साध्वी सुशीलप्रभा**

पूज्यप्रवर ने नव दीक्षित को पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए संयम जीवन में किस तरह सावधानी रखनी, वो फरमाया। जीवन में संयम में सहन करना सीखें। अनुशासन का ओज आहार अलग स्थान में प्रदान करने का विचार है।

दीक्षा संस्कार से पूर्व मुमुक्षु बहनों का परिचय मुमुक्षु समता ने दिया। समणीजी जिनका श्रेणी आरोहण हो रहा है, उनका परिचय समणी ज्योतिप्रज्ञा जी ने दिया। पारमार्थिक शिक्षण संस्था के अध्यक्ष बजरंग जैन ने आज्ञा पत्र का वाचन किया। पारिवारिक जनों ने मुमुक्षु बहनों के आज्ञा पत्र पूज्यप्रवर को भेंट किया।

मुमुक्षु सुरभि, मुमुक्षु चेतना, श्राविका सुरजबाई एवं समणी रुचिप्रज्ञा जी, समणी प्रशांतप्रज्ञाजी, समणी मनस्वीप्रज्ञा जी, समणी शरदप्रज्ञा जी ने अपनी भावना पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में अभिव्यक्त की।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि दीक्षार्थी बहनें उपस्थित हैं। हमें पूज्यप्रवर जैसे ऐसे गुरु मिले हैं कि जिनकी शिक्षा से हम अपने आपको जान सकें। भारतीय संस्कृति में दीक्षा को एक अनुष्ठान के रूप में माना है। दीक्षा एक क्रांति है। इससे बाहर भी और भीतर का भी रूपांतरण होता है। दीक्षार्थी व्रतों का कवच स्वीकार करता है। दीक्षा के लिए जरूरी है कि व्यक्ति के मन में वैराग्य का भाव हो। ज्ञानयुक्त वैराग्य हो। दीक्षा की सब संप्रदायों में अपनी-अपनी परंपरा है, पर तेरापंथ धर्मसंघ की दीक्षा विशेष महत्त्वपूर्ण है, कारण यहाँ दीक्षा देने का अधिकार केवल आचार्य को है। तेरापंथ में दीक्षा ले साधना करने वाले अपना जीवन गुरु-चरणों में समर्पित कर निश्चिंत हो जाते हैं।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

पावन स्मृति

सेठ हरगोपाल नन्हीदेवी जैन मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि०)

सी-2 / 19, द्वितीय तल, प्रशांत विहार, सेक्टर-14, रोहिणी, दिल्ली-85

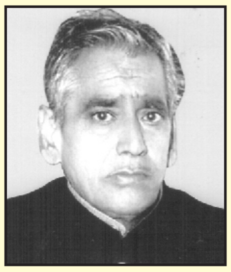

श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व० हरगोपाल जैन
स्वर्गवास
12-02-1979

श्रद्धा की प्रतिमूर्ति स्व० नन्ही देवी जैन
स्वर्गवास
18-02-2007

परिष्कार करते-करते मनुष्य भगवान भी बन सकता है। जीवन को सफल बनाने के लिए आदमी को अपने विचार, आचार व व्यवहार में अपेक्षित परिष्कार करते रहना चाहिए।

नत्थू राम जैन-कुसमलता जैन, नरेश-जयश्री जैन, विनोद-कविता जैन
पुनीत-गरिमा जैन, रितिक जैन, यशस्वी जैन

(उकलाना-हिसार-दिल्ली)

✦ जीवन को अच्छा बनाने के लिए व्यसनमुक्तता आवश्यक है।
–आचार्यश्री महाश्रमण

बहुश्रुत की पर्युपासना से वर्तमान और भविष्य दोनों सुधर सकते हैं : आचार्यश्री महाश्रमण

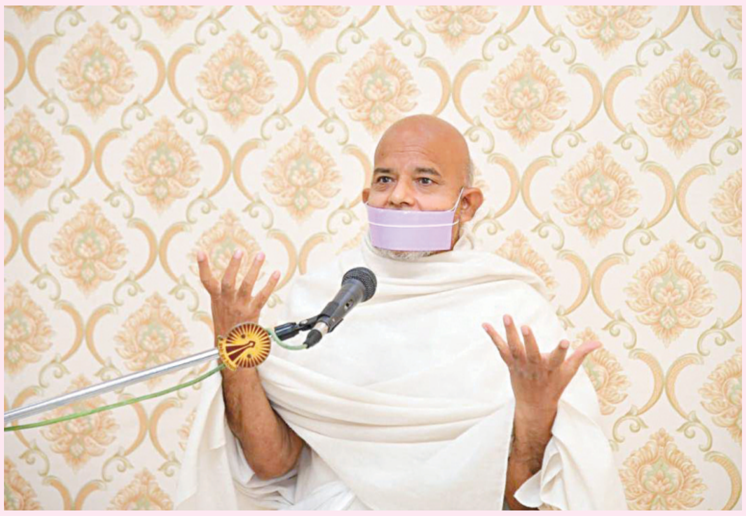

जैन विश्व भारती, १८ जनवरी, २०२२

अध्यात्म जगत के महान प्रचेता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे सामने तीन काल हैं–अतीत काल, वर्तमान काल और अनागत काल। अतीत और अनागत तो अनंत हैं। वर्तमान हम सापेक्ष रूप में ग्रहण कर सकते हैं। निश्चय में जाएँ तो एक समय वर्तमान है।

जैन दर्शन में समय एक पारिभाषिक शब्द है, काल की सर्वाधिक और लघुत्तम ईकाई समय होता है। आँख के एक निमेष में असंख्य समय हो जाते हैं।

वर्तमान जीवन, वर्ष, माह के सापेक्ष से वर्तमान को जाना जा सकता है। हम वर्तमान जीवन को सामने रखें। सिद्धांत कहता है कि इस जीवन से पहले हमने अनंत जन्म-मरण कर लिए हैं। कई-कई लोगों को पिछले जन्म की स्मृति हो सकती है। स्वस्मृति से पता चल जाए कि मैं कहाँ से आया हूँ या तीर्थंकर-केवली बता सकते हैं। सुनने से पूर्व की स्मृति हो सकती है।

अनागत के जन्मों को भी कोई ज्ञानी बता दे। अतीत का काल तो बीत गया है, उस पर ज्यादा ध्यान न दें। ध्यान वर्तमान और अनागत काल पर दें। हम सोचें इस जीवन के बाद मेरा क्या हो सकता है? आगामी जीवन पर ध्यान देने के लिए वर्तमान पर ध्यान देना होगा। वर्तमान बढ़िया होगा तो आगामी जीवन बढ़िया हो सकेगा।

शास्त्रकार ने श्लोक में बताया है कि इहलोक हित, परलोकहित और सुगति में जाना इनके लिए हम बहुश्रुत की पर्युपासना करें। बहुश्रुत यानी जिसके पास बहुत ज्ञान है, साधु है, त्यागी है। उससे संपर्क का ज्ञान लें। बहुश्रुत जो पथदर्शन दें। प्रश्न का समाधान मिलने से हमारा ज्ञान बढ़ सकता है, स्पष्टता आ सकती है।

जो आदमी पूछता है, समाधान जो दिया जा रहा है, उसको सुनता है, सुनने के बाद धारण करता है, ऐसा जो प्रयत्न करता है, उसकी बुद्धि ज्ञान बढ़ जाता है। जैसे कमलिनी सूर्य उदय होने से विकसित हो जाती है। बहुश्रुत साधु से यथोचित ज्ञान लेने का प्रयास करना चाहिए।

कई साधु साध्वियाँ विशेष ज्ञान संपन्न होते हैं। समझाने का अच्छा तरीका होता है तो श्रोता अच्छा ग्रहण कर सकता है। पात्र देखकर ज्ञान परोसना चाहिए। तार्किक तत्त्व की बात से समझाया। बहुश्रुत से समझने का प्रयास करें तो सही मार्गदर्शन प्राप्त हो सकता है।

गुरुदेव तुलसी में कितना ज्ञान था। कैसे प्रशिक्षण प्रदान करते थे। पूज्य महाप्रज्ञ जी में कितना वैदुष्य था, कितने बहुश्रुत थे। हजारों-हजारों गाथा प्रमाण कंठस्थ था। ज्ञान का पुनरावर्तन हो जाता है, तो वह ज्ञान और मजबूत हो जाता है। हम जीवन में आगे के बारे में सोचें और उसके अनुसार बहुश्रुत से पथदर्शन लेना चाहिए ताकि यह जीवन भी अच्छा रहे और आगे का भी अच्छा रह सके, कभी मोक्षश्री का वरण कर सके। इसलिए शास्त्रकार ने बताया है कि बहुश्रुत की पर्युपासना करनी चाहिए।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में सपना जैन, ज्ञानशाला ज्ञानार्थी, स्थानीय सभाध्यक्ष संपत डागा, स्थानीय महिला मंडल अध्यक्ष प्रीति जैन, कन्या मंडल से निशी सिंघी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर से पक्खी का खमतखामणा करने साध्वीप्रमुखाश्री जी सहित सभी साध्वियाँ पधारी। पूज्यप्रवर ने मंगल प्रेरणा प्रदान कराई। साध्वी प्रज्ञावती जी के सिंघाड़े ने गीत के माध्यम से अपनी भावना पूज्य चरणों में अर्पित की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमारजी ने किया।

जैन दर्शन के सिद्धांत जैन दर्शन के स्तंभ के...

(पृष्ठ ३ का शेष)

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में कई साध्वियों की प्रस्तुति हुई। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि कई सिंघाड़े अपने मुखिया या सहवर्ती से विमुक्त होकर आए हैं। जीवन में आना-जाना चलता रहता है। सभी साधना में अच्छी गति-प्रगति करें।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में आज साध्वी शशिप्रभाजी, साध्वी राजकुमारी जी, साध्वी यशोमतिजी, साध्वी प्रफुल्लकुमारी जी, साध्वी अमितप्रभाजी, साध्वी शशिरेखाजी, साध्वी परमयशा जी, साध्वी रतिप्रभाजी, साध्वी विशदप्रज्ञा जी, साध्वी संगीतश्रीजी आदि साध्वियों ने अपने वक्तव्य एवं श्रद्धा गीतों से पूज्यप्रवर का वर्धापन किया।

परिसर भ्रमण के क्रम में परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी जैन विश्व भारती में साधना के लिए नवनिर्मित आचार्य तुलसी इंटरनेशनल प्रेक्षा मेडिटेशन सेंटर के भवन में पधारे। भवन के संदर्भ में अवगति प्राप्त कर आचार्यश्री महाश्रमणजी ने साधना कक्ष में विराजमान होकर लोगों को ध्यान का प्रयोग भी कराया। आचार्यश्री ने पावन पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि यहाँ साधकों को साधना की अच्छी खुराक मिलती रहे, योग-साधना आदि का अच्छा उपक्रम चलता रहे और निरंतर विकास होता रहे। आचार्य तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के समय प्रेक्षाध्यान का प्रादुर्भाव हुआ। जैविभा में पहले निडम था और अब इस केंद्र से और विराट रूप सामने आ रहा है। मुख्यमुनि महावीर कुमार जी, मुनि कुमारश्रमण जी, मुनि कीर्तिकुमार जी, समणी नियोजिका अमलप्रज्ञाजी व जैन विश्व भारती के अध्यक्ष मनोज लुणिया ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इससे संबंधित लोग आचार्यश्री के पदार्पण से भाव-विभोर बने हुए थे।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि ऋषि महान प्रसाद वाले होते हैं। तेरापंथ के आचार्यों में विनम्र होना आश्चर्य नहीं है, ऐसा आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी फरमाते थे।

मोक्ष की साधना के लिए नौ तत्त्वों का ज्ञान...

(पृष्ठ २ का शेष)

मोक्ष अवस्था में न बंध होगा न पुण्य पाप। जिससे संवर और निर्जरा भी अनपेक्षित हो जाएगी। मोक्ष प्राप्त होने के बाद केवल मुक्त अवस्था में आत्मा रहेगी अर्थात् कर्म मुक्त आत्मा मोक्ष का वर्ण करती है। इस प्रकार जैनागमों में नौ तत्त्व अर्थात जीव-अजीव, पुण्य-पाप, आश्रम-संवर, निर्जरा बंध और मोक्ष का वर्णन दिया गया है। इन्हीं के माध्यम से मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। सम्यक्त्व से बड़ा कोई रत्न नहीं होता है। इससे बड़ा कोई मित्र, भाई या बंधु नहीं होता है। इस प्रकार व्यक्ति को सम्यक्त्व की प्राप्ति की दिशा में आगे बढ़ने का निरंतर प्रयास करना चाहिए। साध्वी सुभप्रभाजी, साध्वी प्रसमरतिजी, साध्वी विशदप्रज्ञा जी, साध्वी संघप्रभा जी द्वारा आचार्यप्रवर की अभिवंदना में गीतिका प्रस्तुत की गई। साध्वी पुण्ययशा जी ने अपनी अभिव्यक्ति दी। तत्पश्चात लाडनूं नगर पालिका द्वारा आयोजित नागरिक अभिनंदन समारोह में प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष शांतिलाल बरमेचा, राजेश दुगड़, सुशीला बोकाड़िया, अणुव्रत समिति अध्यक्ष शांतिलाल बैद, तेयुप कोषाध्यक्ष सुमित मोदी, टीपीएफ से मन्नालाल बै, दिगंबर समाज से चांदकपुर सेठी, ओसवाल पंचायत से सरपंच नरेंद्र सिंह भुतोड़िया, राजेश विद्रोही, शहर के काजी मोहम्मद मदनी, नगर पालिका लाडनूं के उपाध्यक्ष मुकेश खिंची ने पूज्यप्रवर का अभिनंदन किया।

लाडनूं क्षेत्र के विधायक मुकेश भाकर ने आचार्यप्रवर के दर्शन कर कहा कि मैं स्वयं को आपके दर्शन से भाग्यशाली समझता हूँ। आचार्यप्रवर की अभिवंदना में ओसवाल पंचायत, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, तेयुप, सकल दिगंबर समाज, भारत विकास परिषद, लाडनूं चेंबर ऑफ कॉमर्स, रामानंद गौशाला, महाराणा प्रताप फाउंडेशन, जाट महासभा, सैनिक क्षत्रीय सभा संस्थान, मैढ़ स्वर्णकार समाज सेवा समिति, राजस्थान शिक्षक संघ, विप्र फाउंडेशन, आवामी इतेहाद मजलिस नूर फाउंडेशन, अखिल भारतीय अनुसूचित जाति परिषद, अग्रवाल सभा, बार एसोसिएशन, प्रजापति समाज सेवा समिति, विश्व हिंदू परिषद, सरपंच संघ, महेश्वरी समाज, जांगिड़ विकास समिति, दुर्गा दल आदि संगठनों ने अभिनंदन पत्र समर्पित किए। अभिनंदन समारोह का संचालन वीरेंद्र भाटी ने किया।

योगक्षेम
अभातेयुप योगक्षेम योजना

✻ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✻ श्री अशोक श्रेयांस बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद	11,00,000
✻ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✻ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✻ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✻ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✻ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✻ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✻ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✻ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✻ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✻ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✻ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000

✦ अनावेश, अनाग्रह और गहराई की स्थिति में होने वाला चिंतन सम्यक् होता है।

– आचार्यश्री महाश्रमण

साध्वीप्रमुखाश्री जी के अमृत महोत्सव पर विशेष

एक असाधारण व्यक्तित्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री

वत्सलता की वारिणी पल-पल उजाला बाँटने वाली मातृहृदया असाधारण व्यक्तित्व के धनी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा का जन्म आचार्य तुलसी की जन्म धरा लाडनूं में हुआ। शैशव अवस्था को पूर्ण कर अपने वैराग्य के अंकुर को प्रस्फुटित किया। केलवा तेरापंथ धर्मसंघ की जन्मभूमि में आपकी दीक्षा हुई। अध्ययन अध्यापन की बढ़ती हुई रुचि को आपने विस्तार दिया। वि०सं० २०१५ में ३५ दिनों में ३५ कविताओं की रचना कर आप अपने एक नए कीर्तिमान का सृजन किया।

असंभव कुछ भी नहीं, इच्छा शक्ति प्रबल हो।
मिट जाती सारी दुविधाएँ, ऊँचा अगर मनोबल हो।।

वर्तमान में तेरापंथ धर्मसंघ की आठवीं साध्वीप्रमुखा के पद को सुशोभित कर रही हैं। आपका चयन दिवस अमृत महोत्सव के रूप में आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में जनवरी के अंतिम सप्ताह में आयोजित होने वाला है। आपके गुणों को शब्दों का परिधान पहनाना सूर्य को दीपक दिखाना मात्र होगा, आपकी ज्ञान पिपासा अगाध है।

आपकी अर्पमत्तता, सृजनधर्मिता, श्रद्धा और आचार की उज्ज्वलता, स्वाध्यायशीलता, कर्मठता, जागरूकता आदि गुण आपके विशिष्ट व्यक्तित्व को उजागर करने वाले हैं। आप एक साहित्यकार, कवियित्री एवं प्रवक्ता ही नहीं बल्कि कुशल लेखिका एवं संपादिका भी हैं। आगम, व्याकरण, न्याय-दर्शन, इतिहास, काव्य आदि विषयों का अध्ययन करते हुए आपने योग्यतम परीक्षाएँ संपन्न की हैं, विशेष योग्यता के लिए आचार्यश्री तुलसी ने आपको पुरस्कृत किया। संस्कृत, प्राकृत की हस्तलिखित पत्रिकाओं पराग, तरंगिणी, नीरज आदि के साथ जुड़कर ज्ञान के क्षेत्र में विशेष अवगाहन किया। विक्रम संवत् २०२२ में आगम-संपादन के महान कार्य में आपकी सहभागिता आपके बुद्धि कौशल का ही सुपरिणाम है।

गुरु तुलसी की दिव्य दृष्टि का, सारा जग है आभारी।
जिनके कुशलकारों ने सिरजी, मूरत कितनी मनहारी।।

पुरुषार्थ का आधार आत्मविश्वास : आपने ज्ञान की भक्ति है, पुरुषार्थ की शक्ति है और आत्म-विश्वास के प्रति अनुरक्ति है। इन तीनों की समन्विति ही आपके कठिन-से-कठिन कार्य को सहजता और सुगमता से पूर्ण कर देती है। आपकी कविताओं में गांभीर्य है। अनुप्रास का भी अच्छा योग है। आपके दृढ़ आत्मविश्वास ने आपके पुरुषार्थ को संचित कर आपके जीवन को ऊर्ध्वगामी बना दिया।

सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति : 'सहन करो सफल बनो' आचार्य महाप्रज्ञ के द्वारा निर्दिष्ट इस सूत्र को आपने अपने जीवन में चरितार्थ कर लिया। चाहे सब्जी में मिर्ची ज्यादा हो, चाहे सब्जी खारी हो, अपने आहार को ग्रहण किया। आपने अपनी समता अखंड रखी एवं गुरुदेव द्वारा प्रदत्त उपालंभ को भी भावी जीवन के निर्माण का बहुत बड़ा आधार मानकर उसे सहन किया और गुरुदृष्टि में सफलता हासिल की। इस प्रकार आपका जीवन गुणों का समवाय है। लक्ष्य के प्रति गहरी निष्ठा, आपके धैर्य को उजागर करती है। नारी की कर्मजा शक्ति को आपने जीवंत कर समाज के सामने रख दिया।

तम को हटाकर नया प्रकाश किया तुमने।
नारी शक्ति को नया आयाम दिया तुमने।।

इस प्रकार मेरी दृष्टि में आपका जीवन गुना-सुमनो का एक बगीचा है। जहाँ से अनेक सौरभमय पुष्पों की सुवास सारे जहाँ को सुवासित कर रही है और हमेशा करती रहे। इसी मंगलभावना से भावित अमृत महोत्सव आपका चयन-दिवस हम सदा मनाती रहें और अपने जीवन को भी सुरभिमय बनाएँ, इसी शुभाशंसा के साथ मंगलकामना।

अभिनंदन! शत-शत वंदन।

– तेरापंथ महिला मंडल, लाडनूं

वंदन मेरा उस माँ को

वंदन मेरा उस माँ को
जिंदगी के बीहड़ पथ पर
ऊँगली पकड़ चलना सिखाया
वंदन मेरा उस माँ को जिसने
भीतर में सोया शौर्य जगाया।।

स्वप्न सलोने देखे अनगिन
नहीं जानती सच करना
चित्र उकेरे ऊर में लेकिन
आता नहीं उसमें रंग भरना
जीवन के मधुवन में जिसने
प्रेरणा का पुष्प खिलाया।।

चाह तीव्र मंजिल पाने की
कौन दिखाए राह सही
कामना नभ को छूने की
पंख समुचित ढूँढ़ रही
भू पर पाँव रखकर जिसने
आसमान छूना सिखाया।।

धूमिल है नारी अस्मिता
कैसे करे सुरक्षा खुद की
कब-कब बने रोहिणी रक्षिता
उलझन भरी पहेली जग की
नारी के मूल गुणों से जिसने
हरपल साक्षात्कार कराया।।

अबोध श्राविका धर्मसंघ की
बनना जयंती की परछाई
साधना करके उपशम की
करना जीवन में धर्म कमाई
चंदनबाला बनकर जिसने
ज्ञान का नव दीप जलाया।।

अमृत महोत्सव वर्धापन बेला
चिहुँ दिशि खुशियों का मेला
गुरु निष्ठा व संघ निष्ठा से
जिनशासन सम्मान बढ़ाया।।

– कुमुद-जितेंद्र कच्छारा

वृहद मंगलपाठ कार्यक्रम

कालबादेवी (दक्षिण मुंबई)।

शासनश्री साध्वी विद्यावती जी 'द्वितीय' के सान्निध्य में नव वर्ष के उपलक्ष्य में वृहद मंगल पाठ का कार्यक्रम महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल में रखा गया। नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ कार्यक्रम प्रारंभ हुआ।

साध्वीवृंद ने कुछ एक मंगल मंत्रों एवं मंगल श्लोकों का उच्चारण किया। वृहद मंगलपाठ के पश्चात साध्वी प्रेरणाश्री जी, साध्वी मृदुयशाजी, साध्वी रिद्धियशा जी ने नव वर्ष के उपलक्ष्य में सुमधुर गीत का संगान किया।

आचार्य महाप्रज्ञ विद्यानिधि फाउंडेशन के अध्यक्ष किशनलाल डागलिया एवं दक्षिण मुंबई तेरापंथ सभा के अध्यक्ष गणपत लाल डागलिया ने संपूर्ण श्रावक समाज के प्रति शुभकामना अभिव्यक्त की। साध्वी प्रियंवदा जी ने अपने वक्तव्य में 'मिशन उत्थान' एवं 'उत्कर्ष' की श्रेणियों के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। साध्वी विद्यावती जी ने कहा कि नए वर्ष में कुछ नया संकल्प संजोए।

कार्यक्रम में उपस्थित तेरापंथ सभा के मंत्री दिनेश धाकड़, तेयुप के अध्यक्ष पूरण चपलोत, उपाध्यक्ष नितेश धाकड़, अशोक बरलोटा, मंत्री रौनक धाकड़, तेरापंथ महिला मंडल की संयोजिका भावना धाकड़, स्थानीय अणुव्रत समिति के संयोजक किशन राठौड़ आदि कई गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

सूरत।

सरदारशहर निवासी, सूरत प्रवासी मोहनलाल बोथरा के संपुत्र हेमंत-मनीषा बोथरा के प्रांगण में पुत्र रत्न का जन्म हुआ। जिसका नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष मालू, मीठालाल भोगर ने संपूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

संस्कारकों की प्रेरणा से सभी ने त्याग-प्रत्याख्यान किया। मोहनलाल ने उपस्थित पारिवारिकजन का आभार ज्ञापन किया।

तेयुप से पीयूष दुगड़ ने बोथरा परिवार का आभार ज्ञापन किया एवं नामकरण पत्रक व मंगलभावना पत्रक भेंट किया।

नामकरण संस्कार

साउथ हावड़ा।

गंगाशहर निवासी, साउथ हावड़ा प्रवासी विशाल-रूबी भंसाली के संपुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से संस्कारक मालचंद भंसाली ने संपूर्ण विधि एवं मंत्रोच्चार द्वारा संपादित करवाया।

अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा ने भंसाली परिवार द्वारा विधिवत रूप से मंगलभावना यंत्र की स्थापना करवाई। सहमंत्री अमित बेगवानी ने भंसाली परिवार का आभार ज्ञापन किया।

नामकरण संस्कार

पर्वत पाटिया।

सरदारशहर निवासी, सूरत प्रवासी निशांत-आयशा के प्रांगण में सुपुत्र का जन्म हुआ। जिसका नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक धर्मचंद श्यामसुखा एवं स्थानीय परिषद के संस्कारक रवि मालू ने संपूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से करवाया।

तेयुप, पर्वत पाटिया की तरफ से मंगलभावना यंत्र भेंट किया। संस्कारक द्वारा परिवार से त्याग-प्रत्याख्यान करवाया गया। अंत में आभार ज्ञापन संस्कारक रवि मालू ने किया।

नूतन गृह प्रवेश

भुज।

मंजुला बेन/कानजी भाई जेमल दोशी के नए घर का गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक प्रभुभाई मेहता, नरेंद्रभाई मेहता, भरत बाबरिया ने संपन्न करवाया। विधि का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के मंत्रोच्चार से हुआ।

कार्यक्रम में तेरापंथ सभा के अध्यक्ष हसमुख भाई मेहता, महिला मंडल अध्यक्षा जयश्रीबेन खंडोर, तेयुप अध्यक्ष आशीष बाबरिया, उपाध्यक्ष जिग्नेश दोशी, मंत्री महेश गांधी, सहमंत्री भावित मेहता उपस्थित थे। परिवार की ओर से कानजीभाई और जतिनभाई ने आभार प्रगट किया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

नालासोपारा (मुंबई)।

पिंटू स्व० राजेंद्र बापना कांकरोली, नालासोपारा मुंबई के नूतन प्रतिष्ठान का उद्घाटन अभातेयुप जैन संस्कारक पारस बापना ने मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ मंगलभावना पत्र स्थापित कर नूतन प्रतिष्ठान का जैन विधि द्वारा संपादित किया।

संचालन तेयुप के पूर्व अध्यक्ष रमेश ढालावत ने किया। बापना परिवार की ओर से संस्कारक एवं सभी पदाधिकारियों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

इस अवसर पर परिवार से दादाजी मोहनलाल बापना, शंकरलाल दुगड़, मातुश्री शीला बापना, धर्मपत्नी भावना बापना एवं मीना शांतिलाल सांखला, अर्पित ढालावत, पार्थ, भव्य धाकड़, नैतिक जैन एवं पारिवारिक-जन गणमान्य एवं पदाधिकारियों की सराहनीय उपस्थिति रही।

✦ जीवन का सार है सच्चाई। दुनिया में यथार्थ भाव आज भी जीवित है। कुछ लोग ऐसे मिलेंगे जो यथार्थ की आराधना करने का प्रयास करते हैं।

—आचार्यश्री महाश्रमण

सेवा कार्य

काठमांडू।

अभातेममं द्वारा निर्देशित काठमांडू महिला मंडल तथा कन्या मंडलद्वारा असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के प्रमुखा पद पर मनोनयन होने के ५०वें स्वर्णिम वर्ष की अभिवंदना हेतु अमृत सिंचन के अंतर्गत भाषण प्रतियोगिता एवं साध्वीप्रमुखाश्री के श्रद्धा धैर्यता एवं समर्पण को दर्शाते हुए एक कथानक की प्रस्तुति दी गई। ललित मरोठी ने साधुवाद देते हुए कहा कि काठमांडू महिला मंडल सेवा भाव के साथ हर दिनसमाज उपयोगी कार्य करती है। कार्यक्रम की शुरुआत परामर्शक चंदा देवी बैंगानी ने महामंत्र एवं प्रेरणा गीत रेणु दुगड़ द्वारा प्रस्तुत किया गया।

अध्यक्ष अमिता नाहटा ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में सभी का स्वागत करते हुए अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। भाषण प्रतियोगिता में १० बहनों की सहभागिता रही। तीन निर्णायकों की टीम के द्वारा पूरी प्रामाणिकता से निर्णय लिया गया, जिसमें काठमांडू की परामर्शक मैना देवी नाहटा पूर्व अध्यक्ष सुमन देवी नाहटा एवं हैदराबाद की पूर्व अध्यक्ष पुष्पा देवी बरड़िया ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रथम स्थान आरती धारीवाल, द्वितीय स्थान सुमन कोठारी, तृतीय स्थान अंजु चोरड़िया प्राप्त किया।

कन्या मंडल से संजना सेठिया ने प्रथम एवं स्नेहा छाजेड़ ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। साध्वीप्रमुखाश्री जी द्वारा धैर्य एवं समर्पण को दर्शाते हुए मंडल की बहनों द्वारा कथानक दृश्यांक की प्रस्तुति दी गई। गूगल फार्म द्वारा क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में ७५ बहनों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन वर्षा बेगवानी ने किया। तकनीकी संचालन सह-प्रचार प्रसार मंत्री प्रियंका पारख तथा धन्यवाद ज्ञापन मंत्री निशा जैन ने किया।

'बने सहारा फैले उजियारा' कार्यक्रम

विजयनगर, बैंगलोर।

अभातेममं के अंतर्गत 'बने सहारा फैले उजियारा' कार्यक्रम के अंतर्गत तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा कार्यक्रम बापूजीनगर स्थित गीता आश्रम में किया गया। जहाँ पर ३० बच्चों को स्टेशनरी, किताबें, मास्क, बिस्किट, संक्रांति की मिठाई और फ्रूट्स आदि सामग्री का वितरण किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के साथ की गई। कन्याओं ने बच्चों के लिए अनेक गेम रखे।

इस कार्यक्रम में वहाँ के सभी बच्चों को पारिवारिक माहौल का एहसास हुआ। कार्यक्रम की सफलता के लिए महिला मंडल की अध्यक्ष प्रेम भंसाली ने कन्या मंडल प्रभारी मेघना हिरण को बधाई प्रेषित की।

कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष राजेश चावत की उपस्थिति रही। महिला मंडल, कार्यकारिणी सदस्य सपना मांडोत, कविता बाफना उपस्थित रहे। आश्रम के प्रेसिडेंट तथा वहाँ के कार्यकर्ताओं ने तेरापंथ महिला मंडल के साथ कन्या मंडल के सेवा कार्य की प्रशंसा की। कार्यक्रम का संचालन कन्या मंडल संयोजिका खुशी गांधी ने किया। सह-संयोजिका प्रीति टेबा ने कार्यक्रम के संचालन में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की।

महिला मंडल के विविध आयोजन

एक दिवसीय संकल्प यात्रा का आयोजन

जयपुर।

साध्वीप्रमुखाश्रीजी के ५०वें मनोनयन अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में एक दिवसीय संकल्प यात्रा में अभिवंदना हेतु महिला मंडल की बहनों तथा कन्या मंडल द्वारा बड़े उत्साह व श्रद्धा के साथ कार्यक्रम आयोजित हो रहा है। प्रतिदिन के संकल्प का पालन संयोजिका चंचल दुगड़, पूर्ण जागरूकता के करवा रही हैं।

तेरापंथ की मदर टेरेसा, मातृत्व समान साध्वीश्री जी को मंडल द्वारा ५१ संकल्पों का एक गुलदस्ता भेंट किया गया।

कन्या मंडल की कन्याओं ने मिलकर एक छोटे रूप 'कर्तव्य के भाव'। दूसरे ग्रह से आए एलियन ने सुना और उसने मंडल को निवेदन किया मैं एक साध्वीश्रीजी जैसा 'रोबोट' बनाने का इच्छुक हूँ उसमें फंक्शन डालने हेतु आपकी मदद मिल जाए और साथ में साध्वीश्री का उद्‌बोधन मिल जाए तो सोने में सुहागा हो जाए।

सुमन बोरड़ ने महिला मंडल के द्वारा किए जाने वाले सभी कार्यों से अवगत कराया। पाँच दोहे से अपने भावों की प्रस्तुति दी।

स्नेहम प्रोजेक्ट्स का आगाज

बालोतरा।

अभातेममं के निर्देशन में स्नेहम प्रोजेक्ट के तहत निर्मला देवी संकलेचा की अध्यक्षता में तेरापंथ महिला मंडल, बालोतरा द्वारा स्नेह मनोविकास विद्यालय व परामर्श केंद्र में इसका आगाज किया गया। मंत्री संगीता बोथरा ने बताया कि इस स्कूल में लगभग ४० बच्चे आते हैं। इस कार्यक्रम में नगर परिषद के चेयरमैन सुमित्रा वेद मेहता और पार्षद चंद्रा बालड की उपस्थिति रही। इसी स्कूल के प्रिंसिपल राजेश ने बताया कि इस स्कूल में बच्चे MR+associate condition, Add, Adhd, autism, cp, vi, Hi Ld आदि श्रेणी के बच्चे हैं, पहले बहनों द्वारा स्कूल का निरीक्षण किया गया और उन्हीं की जरूरत के अनुसार सारी सामग्री भेंट की गई।

इसी क्रम में महिला मंडल अध्यक्ष निर्मला देवी संकलेचा की तरफ से सभी बच्चों को सिंह चक्की वितरित की गई। उपाध्यक्ष चंद्रा बालड़ की तरफ से शॉल, निवर्तमान अध्यक्ष अयोध्या देवी ओस्तवाल की तरफ से सभी बच्चों को चॉकलेट दी गई। प्रिंसिपल, टीचर सभी ने महिला मंडल के इस कार्यक्रम की सराहना की। इस कार्यक्रम में उपाध्यक्ष रानी बाफना, कोषाध्यक्ष उर्मिला सालेचा, सहमंत्री इंदु भंसाली, रेखा बालड़, प्रचार-प्रसार मंत्री पुष्पा सालेचा, कन्या मंडल प्रभारी श्वेता सालेचा, अभातेममं सदस्य सारिका बागरेचा उपस्थित थे। आभार ज्ञापन मंत्री संगीता बोथरा ने किया।

क्विज प्रतियोगिता का आयोजन

विजयनगर।

असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के ५१वें मनोनयन पर अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में अमृत सिंचन कार्यक्रम के अंतर्गत अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वावधान में तेममं द्वारा चैतन्य रश्मि पुस्तक पर आधारित क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन भाग लेने वाले प्रतिभागी सभा भवन में तथा अन्य सभी जूम के माध्यम से जुड़े। क्विज प्रतियोगिता में महिलाओं एवं कन्याओं के लिए विभिन्न रचनात्मक राउंड का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का प्रारंभ परामर्शिका मधु सेठिया ने नमस्कार महामंत्र के द्वारा किया गया। कार्यक्रम का मंगलाचरण मंडल के पदाधिकारी बहनों ने किया। सभी का स्वागत मंडल की अध्यक्षा प्रेम भंसाली ने किया। सभी बहनों को प्रेरणा दी कि अमृत सिंचन के हर कार्यक्रम में सभी बहनों को भाग लेने का लक्ष्य रखना है। जूम मीटिंग होस्ट कर्नाटक प्रभारी मधु कटारिया की गरिमामय उपस्थिति रही। जूम मीटिंग की लाइव स्ट्रीमिंग प्रेरणा श्रीमाल ने की। प्रतियोगिता में ६ ग्रुप ने भाग लिया। विकास रश्मि प्रथम स्थान, सुजन रश्मि द्वितीय स्थान एवं संन्यस रश्मि ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। जिसमें निर्णायक की भूमिका उपासक छत्तर सिंह मालू एवं उपासिका सुमन कोठारी ने निभाई। इस कार्यक्रम लगभग ७५ महिलाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रथम, द्वितीय व तृतीय को पुरस्कृत किया। बाकी सभी संभागियों को भी प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया।

कार्यक्रम का संचालन मंत्री सुमित्रा बरड़िया ने किया। आभार सहमंत्री अंजु सेठिया ने किया। वरिष्ठ उपाध्यक्ष महिमा पटावरी तथा प्रचार-प्रसार मंत्री ललिता डागा, सहमंत्री सुनीता भटेवरा एवं कार्यकारिणी सदस्य हंसा दुगड़ का सहयोग रहा।

भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

पर्वत पाटिया।

अभातेममं के निर्देशन में पर्वत पाटिया महिला मंडल ने भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया। जिसमें पाँच बिंदुओं पर बोलना था। असाधारण विनय, असाधारण लेखन, असाधारण नेतृत्व, असाधारण पुरुषार्थ और असाधारण समर्पण। कार्यक्रम की शुरुआत परामर्शक पुष्पा पुगलिया ने नमस्कार महामंत्र से की। बहनों ने संकल्प गीत से मंगलाचरण किया।

प्रतियोगिता में ६ बहनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। सभी ने साध्वीप्रमुखाश्रीजी के बारे में बताया। पूर्वाध्यक्ष मनोज देवी गंग ने अपने भाव व्यक्त किए। स्वागत वक्तव्य अध्यक्ष ललिता पारख व आभार ज्ञापन मंत्री मधु पुगलिया ने किया। जजमेंट उपासिका अंजना पोरवाल और पूर्वाध्यक्ष मनोज देवी गंग ने किया। प्रथम मधु झाबक, द्वितीय सुनीता पारख एवं तृतीय कनक बुच्चा रहे। बहनों की अच्छी उपस्थिति रही। संचालन कोषाध्यक्ष अंजु धाकड़ ने किया।

क्विज प्रतियोगिता का आयोजन

पर्वत पाटिया।

असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के ५१वें मनोनयन पर अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में अमत सिंचन कार्यक्रम के अंतर्गत अभातेममं के निर्देशन में तेममं द्वारा 'चैतन्य रश्मि' पुस्तक पर आधारित क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। निवर्तमान अध्यक्ष कुसुम बोथरा व पूर्व अध्यक्ष मनोज देवी गंग ने सरल भाषा में प्रश्न बनाए। कार्यक्रम की शुरुआत उपासिका मधु झाबक ने नमस्कार महामंत्र से की। प्रेरणा गीत से मंगलाचरण किया गया। स्वागत वक्तव्य अध्यक्ष ललित पारख ने किया।

प्रतियोगिता में चार ग्रुप बनाए गए। विभिन्न राउंड रखे गए। प्रश्न उपासिका मधु झाबक ने पूछे निर्णायक की भूमिका पूर्वाध्यक्ष मनोज देवी गंग और कोषाध्यक्ष अंजु धाकड़ ने निभाई। जिसमें प्रथम कर्तृत्व रश्मि, द्वितीय विकास रश्मि और तृतीय संन्यास रश्मि ग्रुप रहे। इस प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वालों को पुरस्कृत किया जाएगा और सभी भाग लेने वालों को सांत्वना पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। आभार ज्ञापन मीना गांधी ने किया। संचालन कनक बुच्चा ने किया।

रूपांतरण शिल्पशाला

भीलवाड़ा।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं द्वारा मुनि कुलदीप कुमार जी, मुनि मुकुल कुमार जी के सान्निध्य में रूपांतरण कार्यशाला तेरापंथ भवन नागौरी गार्डन में आयोजित की गई। मुनि कुलदीप कुमार जी ने कहा कि जैन आगम में कषाय अर्थात् क्रोध, मान, माया और लोभ के क्षीण होते ही व्यक्ति मुक्ति को प्राप्त हो जाता है। साधना का मूल आधार शरीर है और शरीर आत्मा से युक्त है, आत्मा अनंतकाल से कषाय से जुड़ी हुई है। अनुकूल-प्रतिकूल हर परिस्थिति में क्रिया की प्रतिक्रिया न करें। साधना का क्रम भले ही मंद गति से हो पर निरंतर अभ्यास से वीतरागता और आत्म साधना की ओर हम आगे बढ़ सकते हैं। इस विषय को भाषण के रूप में नहीं अपितु आचरण में लाने का प्रयास हो।

मुनि मुकुल कुमार जी ने कहा कि हमारे जीवन भ्रमण, स्वभाव से विभाव की ओर ले जाने वाला और हमारी आत्मा को प्रताड़ित करने वाला तत्त्व है—कषाय। हमारे शरीर में क्रोध सिर, मान गर्दन, माया पेट में, परंतु लोभ पूरे शरीर में रहता है। मुनिश्री ने कषाय क्षीणता और क्रोध शमन के सहज-सरल छोटे-छोटे प्रायोगिक प्रयोग बताए, जिससे विचार शांत और स्थिर होते हैं। केवल धर्म उपासना करने से कोई लाभ नहीं होता है। जरूरत है जीवन शक्ति, प्राण शक्ति को बढ़ाकर कषाय पर विजय प्राप्त की जाए जिससे जीवन को सुंदर, निरोगी और उन्नत बनाया जा सकता है। मीडिया प्रभारी नीलम लोढ़ा ने बताया कि महिला मंडल अध्यक्षा ने स्वागत वक्तव्य दिया।

मंगलाचरण प्रज्ञा जोन की बहनों ने किया। कार्यक्रम संचालन स्नेहलता झाबक ने किया। आभार मंत्री रेणु चोरड़िया ने किया।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी के अमृत महोत्सव पर विशेष

करें अभिनंदन, शतशत वंदन

● मुनि अर्हत, भरत, जयदीप ●

करें अभिनंदन, शत-शत-वंदन।
सती शेखरा को पाकर, खिला गण गुलशन।।

ओजस्वी वाणी अनुपम, सृजनशील चिंतन।
वत्सल अमृत के सम, दृढ़ अनुशासन।
गुरु तुलसी की इस कृति से, पुलकित जन-मन।।

तेरापंथ शासन की हाँ, जगी पुण्याई।
भाग्य सरायें ऐसी, प्रमुखा जी पाई।
क्या गायें गौरव गाथा, करें कैसे अंकन।।

अर्हत के तुल्य गुरुवर महाश्रमण पाए।
चंदना ज्यूँ प्रमुखाश्री, नयन समाए।
चौथे आरे का मानो, होता है दर्शन।।

आज उगी है अभिनव भोर सुनहरी।
मंगल गीतों की घर-घर, गूँजे स्वर लहरी।
भावों के पुष्पों से हम, करें वर्धापन।।

अमृत महोत्सव मधुरिम बेला सुहानी।
प्रमुदित गद्-गद् तेरापंथ राजधानी।
दीपशिखा बन युग-युग, देना पथदर्शन।।

लय : नमो अरहंतं नमो भगवंतं

अभिनंदन शत-शत बार

● साध्वी राकेशकुमारी ●

भावां रा म्हैं थाल सजावां, अक्षत कुंकुम केसर ल्यावां
मंगल तिलक लगावांजी, अमृत मोच्छव मनावांजी

गण उपवन में छाई खुशियाँ आई आज दीवाली
कल्पतरु आंगण लहरायो खिल रही केसर क्यारी
गोल्डन जुबली उत्सव आयो, आनंद रो दरियो छलकायो।

सागर ज्यूँ गंभीर धीर थे, मेरू सी ऊँचाई
दशों दिशाओं में गूँजे हैं थांरी यश शहनाई
महिमा भूमंडल महकावै, निरखण चांद सितारा आवै।

व्यवहार कुशल श्रमनिष्ठा थांरी समर्पण सेवाभाव
श्रमणीगण परआत्मीयभाव स्यूँ छोड्यो अमर प्रभाव
उजला मौत्यां स्यूँ बधावां, थांरी पदरज शीष चढ़ावां।

त्रय गुरु री आणा आराधी दिलमें स्थान जमायो
देश विदेश यात्रा करने नव इतिहास रचायो (बणायो)
आभामंडल तेज निरालो, अद्‌भुत लेखण कला निहारो।

श्रमणी समाज रो कर संपोषण खोल्यां विकास रा द्वार
चंदेरी री हीरकणी रो चमके दिव्य दिदार
तुलसी वाङ्‌मय लेखनकार, सुण चमके विद्वद परिवार।

युगों-युगों रहो स्वस्थ निरामय मंगल कामना म्हारी
अमृत मोच्छव चंदेरी में महाश्रमण जयकारी
देवे राकेश आज बधाई, वरो विजय सदा वरदाई।

लय : नीले घोड़े रा असवार---

अमृत महोत्सव

● शासनश्री साध्वी सोमलता ●

मनोनयन का नव्य नजारा।
बहे छलाछल अमृत धारा।।

चिन्मय मणि की चेतना का फैल रहा उजियारा।।टेक।।
सूरज चंदा तारों को ले, आज जमीं पर आया है।
सूरजमल जी की तनया को,सबने खूब बधाया है।
कर रही किरणें तिलक तुम्हारा, बहे छलाछल अमृत धारा।।

उछल रही आनंद हिलोरें, नाच रहे मन मोर हैं।
उतरी पहली बार संध में, ऐसी अनुपम भोर है।
जाने किसने जादू डारा, बहे छलाछल अमृत धारा।।

हर धड़कन में सहज समर्पण, के मधुरिम सुर साज हैं।
गुरु तुलसी की हीरकणी यह, श्रमणी गण सरताज हैं।
चमका हमारा भाग्य सितारा, बहे छलाछल अमृत धारा।।

महाश्रमणीजी के नयनों में, अनुकंपा का अंजर है।
रोगी ग्लान शैक्ष की सेवा, में तो शीतल चंदन है।
हम सबने हर बार निहारा, बहे छलाछल अमृत धारा।।

नगाधिपति हिमप्रस्थ समान, उच्चता हर व्यवहार में।
शांत-प्रशांत महासागर सी, गहराई सुविचार में।
डाल रहे हैं सुर थुथकारा, बहे छलाछल अमृत धारा।।

तीन-तीन आचार्यों की, सेवा से पाया अमृत है।
अमृत मोच्छव मना रहे, रूं-रूं में खुशियाँ झंकृत है।
बज रहा नभ तक सुयश नगारा, बहे छलाछल अमृत धारा।।

पवित्रता की पछेवड़ी हो, सहिष्णुता की साड़ी हो।
रचनाधर्मी रजोहरण हो, चिन्मय चर्या सारी हो।
काटें हम कर्मों की कारा, बहे छलाछल अमृत धारा।।

सोमलता के सह शकुंतला, करती है अभ्यर्थना।
संचित जागृत रक्षित करती, श्रद्धा से अभिवंदना।
कह दो सबका भाव स्वीकारा, बहे छलाछल अमृत धारा।।

लय : झिलमिल सितारों का आंगन----

मंगलभावना समारोह का आयोजन

गदग।

तेरापंथ भवन में साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में मंगलभावना कार्यक्रम का आयोजन किया गया। साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी ने कहा कि इतिहास रटना आसान है, पर इतिहास रचना बड़ा मुश्किल है। इतिहास रचने के लिए स्वयं का बलिदान देना होता है, मोमबत्ती प्रकाश देने से पहले स्वयं अग्नि स्नान करती है। गदग में भी २०२१ में एक नया इतिहास शासनश्री साध्वी पद्मावती जी रचा गए, यह सदियों तक याद रहेगा। यहाँ की श्रद्धा, भक्ति, आस्था अविस्मरणीय है।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि मंगलभावना, प्रमोद भावना, ग्रहणशीलता का सूचक है। यात्रा की मंगलकामना की जा रही है। बहुत लंबा समय यहाँ पर विराजना हुआ, हमारे श्रावक माता-पिता के तुल्य हैं, उन्होंने पूरी जिम्मेदारी जागरूकता से संभाला है। शासनश्री साध्वी पद्मावतीजी के विशाल कार्यक्रम में पूरा गदग क्षेत्र में जो श्रद्धा और भक्ति का परिचय दिया है, वह बेजोड़ है।

साध्वी मेरुप्रभा जी व साध्वी दक्षप्रभा जी ने गीतिका प्रस्तुत की। सभा के अध्यक्ष अमृतलाल कोठारी, तेयुप के अध्यक्ष दिनेश संकलेचा, महिला मंडल की अध्यक्षा प्रेमलता कोठारी, उपासिका सरस्वती बाई कोठारी, संगीता संकलेचा, उपासिका सारिका संकलेचा, मधु संकलेचा, शोभा संकलेचा ने मंगलभावना, मंगलकामना की। कार्यक्रम का संचालन कार्यकर्ता जितेंद्र जीरावला ने किया।

शुभ संकल्पों के साथ करें नए वर्ष का प्रारंभ

रायपुर।

रायपुर के वीआईपी रोड स्थित राम मंदिर में मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में नव वर्ष के उपलक्ष्य में वृहद मंगल पाठ का विशेष आयोजन तेरापंथी सभा द्वारा किया गया। नमस्कार महामंत्र के द्वारा मुनिश्री ने कार्यक्रम का प्रारंभ किया। बाल मुनि काव्य कुमार जी ने लोगस्स और दसवेंआलियं के प्रथम अध्ययन का उच्चारण किया। मुनि दीप कुमार जी ने चयनित मंत्रों का अनुष्ठान करवाया।

नव वर्ष पर नव उद्‌बोधन देते हुए मुनि दीप कुमार जी ने कहा—नए वर्ष का प्रारंभ शुभ संकल्पों के साथ करें। संकल्प का बल सबसे बड़ा बल होता है। पवित्र संकल्पों से मन को भावित करें। मनुष्य नवीनता का प्रेमी है। उसे नए खाद्य पदार्थ चाहिए, नया परिधान चाहिए, नया भवन चाहिए और नया वाहन चाहिए पर इसके साथ अपना मस्तिष्क भी नया बनाना चाहिए। मस्तिष्क को नया बनाने के लिए फोरगेट एंड फोरगिव का सूत्र अपनाना चाहिए। मुनिश्री ने उपस्थित जनता को नए वर्ष पर कुछ अनुप्रेक्षाओं के प्रयोग सुझाए और एक वर्ष के लिए संकल्प दिलाए। नव वर्ष पर वृहद मंगलपाठ का मुनिश्री ने श्रवण कराया। सभा अध्यक्ष सुरेंद्र चौरड़िया ने सभी को समाज की तरफ से नव वर्ष की शुभकामनाएँ दी।

कोरोना जन-जागरण बाइक रैली

नालासोपारा (मुंबई)।

कोरोना जन-जागरण रैली एक साथ एक समय कोरोना महामारी से बचाव के लिए तेयुप के सदस्यों के सहभागिता से बाइक रैली के द्वारा भीड़-भाड़ वाले स्थानों पर जन-जागरण अभियान का आयोजन किया गया। रैली आचोले तलाब से आरंभ होकर गालानगर, डॉन गल्ली, ईस्ट टिकेट विंडो, ईस्ट पुलिस स्टेशन, टाकीरोड से नालासोपारा वेस्ट में एसटी डिपो, सिविक सेंटर कार्नर होते हुए भारती ज्वेलर्स के पास लगभग ६ बजे संपन्न हुई।

इस अवसर पर बिना मास्क घूमने वालों को नए कोरोना एवं ओमिक्रॉन वाइरस के बारे में जागृत करते हुए १५०० सर्जिकल मास्क का मुफ्त वितरण किया गया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में कमलादेवी गणेशलाल बोराणा पुत्र कमलेश, महेंद्र, भरत बोराणा परिवार का विशेष सहयोग रहा। इसको सफल बनाने में तेयुप अध्यक्ष किशन कोठारी मंत्री दिनेश धाकड़ एवं तेरापंथ सभा, महिला मंडल, किशोर मंडल, कन्या मंडल, ज्ञानशाला परिवार एवं पूरे समाज का विशेष सहयोग रहा।

✦ वीतरागता की दिशा में गति करने के लिए प्रेक्षाध्यान का प्रयोग सहायक हो सकता है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मा के आसपास

❑ आचार्य तुलसी ❑

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

शरीर-प्रेक्षा है–शक्ति-दोहन की कला

प्रश्न : दोहन से आपका क्या अभिप्राय है? यदि किसी के पास शक्ति है तो उसे कोई भी काम में ले सकता है और शक्ति नहीं है तो कोई व्यक्ति कितना ही कुशल क्यों न हो, वह किसका उपयोग करेगा? कृपा कर आप इस कथ्य को थोड़ा स्पष्ट करें।

उत्तर : इस कथ्य को एक कहानी के माध्यम से समझा जा सकता है–एक व्यापारी व्यापार के सिलसिले में दूसरे देशों की यात्रा किया करता था। एक बार वह ऐसे देश में पहुँच गया, जहाँ गाय, भैंस आदि दूध देने वाले पशु नहीं होते थे। दूसरी बार जब वह वहाँ गया तो अपने साथ एक गाय भी ले गया। उसे देश के राजा की कृपा पाने के लिए वह उसके पास प्रतिदिन कुछ-न-कुछ उपहार भेजता। उसके उपहारों में बहुमूल्य वस्तुओं के साथ-साथ दूध, दही, मक्खन, रबड़ी, मावा, संदेश आदि खाद्य-पदार्थ भी थे। राजा को वे पदार्थ बहुत रुचिकर लगे। व्यापारी कुशल था। उसने इस माध्यम से वहाँ काफी सुविधाएँ उपलब्ध कर लीं और अपना व्यापार जमा लिया। कुछ महीनों बाद वह स्वदेश लौटने लगा तो राजा को अच्छा नहीं लगा। क्योंकि उसके चले जाने से दूध से बने पदार्थ कहाँ से आ सकते थे। अव्यक्त रूप से राजा ने अपनी भावना का आभास उसे दे दिया। व्यापारी ने भावी लाभ की आस में गाय राजा को भेंट कर दी और बता दिया कि वे सारे पदार्थ इसी की बदौलत प्राप्त होते थे।

व्यापारी वहाँ से विदा हो गया। राजा ने अपने कुछ कर्मकरों को गाय की सेवा में नियुक्त कर उन्हें निर्देश दिया कि इससे जो भी पदार्थ मिले उसे लेकर सीधे मेरे पास पहुँच जाना। कर्मकर राजा का आदेश स्वीकार कर सोने और चाँदी के पात्र लेकर गाय के पास खड़े हो गए। थोड़ी देर में गाय ने मूत्र-विसर्जन किया। एक कर्मकर ने आगे बढ़कर चाँदी का पात्र उससे भर लिया। वह उसे लेकर राजा के पास पहुँचा। पात्र में पीला पदार्थ देखकर राजा बोला–'वह तो हमेशा सफेद चीजें लाता था। शायद यह कोई खास चीज हो', ऐसा कहकर उसने एक कटोरी भरकर होंठों से लगा ली। उस बदबूदार नमकीन पेय के दो घूंट भी गले से नीचे नहीं उतरे होंगे कि राजा बौखला उठा। वह कुछ बोले इससे पहले ही दूसरा कर्मकर सोने के थाल में गोबर लेकर आ खड़ा हुआ। राजा ने सोचा–शायद यह पदार्थ ठीक हो और एक चम्मच भर गोबर मुँह में डाल दिया। राजा का मुँह इतना खराब हुआ कि उसे निगलने के बजाय थूक दिया। लोटा भर पानी मँगाकर कुल्ले करने पर भी मुँह का कसैलापन नहीं मिटा।

इस घटना ने राजा को उत्तेजित कर दिया। उसने तत्काल कुछ राजपुरुषों को आदेश दिया कि उस व्यापारी को इसी समय मेरे सामने उपस्थित करो। मेरे साथ भी यह खिलवाड़! कितना धोखेबाज आदमी है! राजपुरुषों ने व्यापारी का पीछा किया और राज्य की सीमा में ही उसे पकड़कर पुनः राजा के पास ले आए। व्यापारी एक बार तो घबराया पर जब उसे स्थिति की जानकारी मिली तो राजा और कर्मकरों की अज्ञता पर मन-ही-मन मुसकरा उठा। उसने अत्यंत विनम्र होकर कहा–'राजन्! मैं आपको धोखा दूँ, यह मैं स्वप्न में भी नहीं सोचता। फिर भी मेरा कसूर इतना है कि मैंने आपको दोहन की विधि नहीं बताई।' राजा का आवेश तब तक शांत हो चुका था। उसने दोहन के संबंध में जिज्ञासा की तो व्यापारी ने गाय को चारा-पानी डालने और दूध दुहने से लेकर खाद्य पदार्थ बनाने तक की विधियाँ उन्हें समझा दीं। उसके बाद राजा के कर्मकरों ने गाय को अच्छे ढंग से संभाल लिया।

यह एक कहानी है। इसमें कितनी सच्चाई है? इस विश्लेषण में मैं नहीं जाऊँगा। पर इससे फलितार्थ यह निकलता है कि प्राप्त शक्ति का बोध और उपयोग हर व्यक्ति के बस की बात नहीं है। शक्ति स्रोत बहता रहता है और व्यक्ति समझ ही नहीं पाता है कि वह उसका उपयोग कैसे करे? शरीर-प्रेक्षा का एक माध्यम है आत्मा की शक्ति को पहचानने का। शक्ति को पहचानकर उसका दोहन करने वाला व्यक्ति साधना के क्षेत्र में बहुत ऊँचाई तक पहुँच सकता है। प्रेक्षाध्यान का अभ्यास करने वाला साधक शक्ति का दोहन करे और लक्ष्य-पूर्ति में उसका उपयोग करे। ऐसा करने के लिए दोहन की प्रक्रिया को समझना जरूरी है। जो दोहन करना नहीं जानता, वह शक्ति प्राप्त नहीं कर सकता।

प्रश्न : सीधे और सरल शब्दों में शरीर-प्रेक्षा की प्रक्रिया क्या है?

उत्तर : सबसे पहली बात है–मन का प्रत्याहार। मन को बाहर से भीतर की ओर ले जाना तथा यह अभ्यास करना कि वह अभ्यासकाल में बाहर न लौटे। इस प्रतिसंलीनता के बाद शरीर-दर्शन का क्रम शुरू होता है। पैर के अंगूठे से लेकर सिर तक अथवा सिर से लेकर पैर के अंगूठे तक शरीर के प्रत्येक अवयव पर ध्यान केंद्रित किया जाए। शरीर में जो संवेदन होते हैं, प्रकंपन होते हैं, पर्याय-परिवर्तन और हलचलें होती हैं, उनका अनुभव किया जाए। आंतरिक संवेदनों को अधिक गहराई से देखा जाए। यहाँ देखने से मतलब है–अनुभव करना। आँख बंद कर देखना है। जैसे इंजेक्शन लगाया जाता है शरीर में, तो दवा बाहर से भीतर गहराई में पैठ जाती है। इसी प्रकार आंतरिक संवेदनों को पकड़ने से, राग और द्वेष से मुक्त भाव से उनके प्रति केंद्रित होने से चित्त अंतर्मुखी बनता है और आंतरिक विशुद्धि बढ़ती है।

प्रश्न : मन प्रतिसंलीनता करने से, चित्त को भीतर मोड़ने से मात्र ध्यान में एकाग्रता बढ़ती है या साधक को कोई विशेष अनुभव भी होता है?

उत्तर : अंतर्मुखता के क्षणों में जो रसानुभूति होती है वह बहिर्मुखता की स्थिति में नहीं हो सकती। सामान्यतः व्यक्ति सोच ही नहीं सकता कि भीतर कितनी रसकूपिकाएं हैं, कितनी सुखद अनुभूतियाँ हैं। क्योंकि हमारा परिचय बाहरी जगत और उसके सुखात्मक संवेदनों तक ही सीमित रहता हैं आंतरिक जगत से परिचय हो ही नहीं पाता। इस अपरिचय का कारण है–राग और द्वेष की ऊर्मियाँ। जब तक वे शांत नहीं हो जातीं, आंतरिक अनुभूति नहीं हो सकती। आचार्य पूज्यपाद ने लिखा है–

रागद्वेषादिकल्लोलैरलोलं यन्मनोऽजलम्।
स पश्यत्यात्मनस्तत्त्वं तत्तत्त्वंनेतरो जनः।।

जिस साधक का मन-रूपी जल, राग-द्वेष की तरंगों से चंचल नहीं है, स्थिर है। वह आत्म तत्त्व को देखता है, उस तत्त्व को दूसरा व्यक्ति नहीं देख सकता।

हमारा चित्त जल से भरा हुआ शांत सरोवर है। सरोवर में छोटा-सा कंकर डालते ही वह अस्थिर हो जाता है, तरंगित हो जाता है। इसी प्रकार हमारा चित्त भी राग-द्वेष की तरंगों से चंचल हो उठता है। उसे शांत बनाए रखने के लिए उसका प्रवेश भीतर हो जाए, यह आवश्यक है।

शरीर-शास्त्रीय दृष्टि से देखा जाए तो हमारा शरीर एक बड़ा कारखाना है। शरीर का सबसे ऊपर का हिस्सा है–चर्म। शरीर-प्रेक्षा करते समय सबसे पहले चर्म के प्रकंपन पकड़ में आते हैं। व्यान नामक प्राणधारा चर्म में ही प्रवाहित होती रहती है। उसके कारण ही वहाँ प्राणशक्ति की हलचलें अथवा विद्युत प्रकंपन चलते रहते हैं। उन हलचलों को, उन प्रकंपनों को पकड़कर शरीर को और अधिक गहराई से देखने पर भीतरी प्रकंपनों और संवेदनों का अनुभव स्वाभाविक-सा हो जाता है। साधक देखता जाए, गहरे में जाकर देखता जाए, केवल देखता जाए, यही शरीर-प्रेक्षा और यही अंतर्दर्शन है।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ❑

(५४)

दो आँखों से परख लिया तुमने इस जंग को
क्यों सहस्र नयनों की अब तुमको अभिलाषा।
दो नन्हे पाँवों से माप लिया हर मग को
क्यों वामन ज्यों पैर तीसरे की प्रत्याशा।।

पहरे विस्मृति के फिर भी स्मृतियाँ होती हैं
मन का सूनापन उनमें ही लीन हो रहा
भटकी हुई व्यथा को तुमने सहलाया है
इसीलिए हर प्राण-विहग बस यहीं खो रहा
तिमिर हो रहा हावी इन प्राणों के रथ पर
दिखलाओ तुम पंथ बढ़ी आलोक-पिपासा।।

संबंधों की भीड़ तुम्हारे दरवाजे पर
अमित स्नेह का स्रोत देखकर बढ़ती जाती
वीरानी राहों में ऊब चुकी जो आँखें
अनिमिष देख रही तुमको पर नहीं अघाती
युग्म-भुजा के स्नेह-पाश में बाँधा सबको
क्यों लक्ष्मी ज्यों चार भुजाओं की अब आशा।।

सबके संदेहों को मिटा रहे कौशल से
प्रश्नों की घाटी में भटक रहा मन मेरा
देख तुम्हारे विविध रूप होता है विस्मय
बतलाओ है कहाँ तुम्हारा देव! बसेरा
समाधान देते रहते हो तुम दुनिया को
पर बढ़ती जाती है क्यों मेरी जिज्ञासा।।

(५५)

आत्मज्योति से दीपित आभा भारत-ज्योति प्रणम।
विश्वज्योति बनकर निखरो तुम ज्योतिर्मय हर याम।।

सतरंगी किरणों के रथ पर जब से चरण टिकाए
युग की झेल चुनौती तुमने नूतन सूर्य उगाए
निकट सिद्धियाँ निधियाँ सारी फिर भी तुम निष्काम।।

आस्थाओं के दरवाजों पर बंदनवार सजाए
जीवन की दुर्गम राहों पर अनगिन फूल बिछाए
पौरुष की पूजा का तुमने दिया मंत्र अभिराम।।

युग की साँसों में अब केवल आहट सुनें तुम्हारी
प्रतिबिंबित हो युग-नयनों में चितवन यह मनहारी
रहो बाँटते तरुण तेज तुम खोल नए आयाम।।

(क्रमशः)

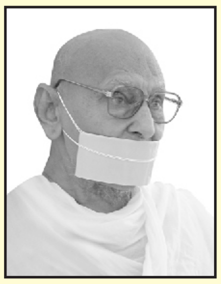

संबोधि

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

बंध-मोक्षवाद

भगवान् प्राह

(८) **अतत्त्वे तत्त्वसंज्ञानं, अमोक्षे मोक्षधीस्तथा।**
अधर्मे धर्मसंज्ञानं, मिथ्यात्वं द्विविधञ्च तत्।।

अतत्त्व में तत्त्व का संज्ञान करना, अमोक्ष में मोक्ष की बुद्धि करना और अधर्म में धर्म का संज्ञान करना मिथ्यात्व कहलाता है। उसके दो प्रकार हैं—आभिग्रहिक और अनाभिग्रहिक।

(९) **आभिग्रहिकमाख्यातं, असत्तत्त्वे दुराग्रहः।**
अनाभिग्रहिकं वत्स! अज्ञानाज्जायते ऽङ्गिनाम्।।

वत्स! अयथार्थ तत्त्व में यथार्थता का मिथ्या आग्रह होना आभिग्रहिक मिथ्यात्व कहलाता है और जो यथार्थ तत्त्व का ज्ञान नहीं होता, वह अनाभिग्रहिक मिथ्यात्व कहलाता है। आभिग्रहिक आग्रहपूर्वक होता है और अनाभिग्रहिक अज्ञानवश होता है।

एक चक्षुष्मान् वह होता है, जो रूप और संस्थान को ज्ञेयदृष्टि से देखता है। दूसरा चक्षुष्मान् वह होता है, जो वस्तु की ज्ञेय, हेय और उपादेय दशा को विपरीत दृष्टि से देखता है। तीसरा उसे अविपरीत दृष्टि से देखता है। पहला स्थूल-दर्शन है, दूसरा बहिर्दर्शन और तीसरा अंतर्-दर्शन। स्थूल-दर्शन जगत् का व्यवहार है, केवल वस्तु की ज्ञेय दशा से संबंधित है। अगले दोनों का आधार मुख्य रूप से वस्तु की हेय और उपादेय दशा है। अंतर्-दर्शन जब मोह के पुद्गलों से ढंका होता है तब वह मिथ्यादर्शन कहलाता है। जब मोह का आवरण टूट जाता है तब सम्यक्त्व का लाभ होता है।

मिथ्यात्व का अभिव्यक्त रूप तत्त्व-श्रद्धा का विपर्यय है। विपरीत तत्त्व-श्रद्धा के दस रूप बनते हैं—

(१) अधर्म में धर्म संज्ञा। (२) धर्म में अधर्म संज्ञा। (३) अमार्ग में मार्ग संज्ञा।
(४) मार्ग में अमार्ग संज्ञा। (५) अजीव में जीव संज्ञा। (६) जीव में अजीव संज्ञा।
(७) असाधु में साधु संज्ञा। (८) साधु में असाधु संज्ञा। (९) अमुक्त में मुक्त संज्ञा।
(१०) मुक्त में अमुकत संज्ञा।

इसी प्रकार सम्यक्-तत्त्व-श्रद्धा के भी दस रूप बताते हैं—

(१) अधर्म में अधर्म संज्ञा। (२) धर्म में धर्म संज्ञा। (३) अमार्ग में अमार्ग संज्ञा।
(४) मार्ग में मार्ग संज्ञा। (५) अजीव अजीव संज्ञा। (६) जीव में जीव संज्ञा।
(७) असाधु में असाधु संज्ञा। (८) साधु में साधु संज्ञा। (९) अमुक्त में अमुक्त संज्ञा।
(१०) मुक्त में मुक्त संज्ञा।

यह साधक, साधना और साध्य का विवेक है। जीव-अजीव की यथार्थ श्रद्धा के बिना साध्य की जिज्ञासा ही नहीं होती। आत्मवादी ही परमात्मा बनने का प्रयत्न करेगा, अनात्मवादी नहीं। इस दृष्टि से जीव-अजीव का संज्ञान साध्य के आधार पर विवेक है। साधु-असाधु का संज्ञान साधक की दशा का विवेक है। धर्म-अधर्म, मार्ग-अमार्ग का संज्ञान साधना का विवेक है। मुक्त-अमुक्त का संज्ञान साध्य-असाध्य का विवेक है।

सिद्धांत की भाषा में जब तक दर्शनमोह के तीन प्रकार—सम्यक्त्व-मोह, मिथ्यात्व-मोह और सम्यक्-मिथ्यात्व-मोह और चारित्र-मोह के प्रथम चतुष्क—अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया और लोभ का उदय रहता है तब तक मिथ्यात्व का अस्तित्व रहता है और जब इन सात कर्म-प्रकृतियों का क्षय-क्षयोपशम होता है, तब सम्यक्त्व (क्षायिक या क्षायोपशमिक) की प्राप्ति होती है।

मिथ्यात्वी विपरीत मान्यता से दीर्घसंसारी हो जाता है। उसे प्रकाश की प्राप्ति नहीं होती। वह जड़-जगत् को अपना आकर्षण केंद्र बना लेता है। मिथ्यात्व की तुलना गीता (१८/३२) के तमोगुण से होती है। वहाँ कहा गया है कि वह बुद्धि तामसी है जो तम से व्याप्त होकर अधर्म को धर्म समझती है और सभी बातों को विपरीत समझती है।

बुद्धि की भाषा में वह दृष्टास्रव है जो यथार्थ में अयथार्थ का दर्शन करता है और अयथार्थ में यथार्थ का।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ❑

(३) चारित्र मार्ग

प्रश्न-२६ : संयमी देवलोक में कौन सा पद पाते हैं?

उत्तर : देवलोक में पाँच पद हैं—
(१) इंद्र (२) सामानिक (३) त्रायस्त्रिंशक (४) लोकपाल (५) अहमिन्द्र
आराधक सामायिक व छेदोपस्थापनीय वाले पाँच ही पद पा सकते हैं। परिहार विशुद्धि अहमिन्द्र छोड़ चार तथा सूक्ष्म संपराय व यथाख्यात केवल अहमिन्द्र पद को प्राप्त करते हैं।
विराधक संयमी कोई भी पद प्राप्त नहीं कर सकता।

प्रश्न-२७: क्या सामायिक व छेदोपस्थापनीय चारित्र भरत व एरावत क्षेत्र के सभी तीर्थंकरों के शासनकाल में होते हैं?

उत्तर : भरत व एरावत क्षेत्रों में एक अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी में चौबीस-चौबीस तीर्थंकर होते हैं। सामायिक व छेदोपस्थापनीय दोनों चारित्र प्रथम व अंतिम तीर्थंकरों के शासनकाल में होते हैं। मध्यवर्ती तीर्थंकरों के शासनकाल में केवल सामायिक चारित्र होता है।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ आचार्य महाश्रमण ❑

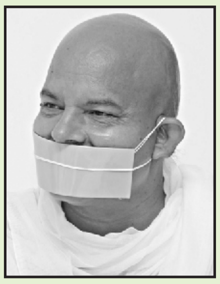

आचार्य सिद्धसेन

गोपालकों की सभा में आचार्य वृद्धवादी विजयी रहे। आचार्य सिद्धसेन अपने संकल्प पर दृढ़ थे। आचार्य वृद्धवादी ने पांडित्य का प्रदर्शन न कर समयज्ञता का कार्य किया, समयज्ञ ही सर्वज्ञ होता है। इस अभिमत पर आचार्य वृद्धवादी को सर्वज्ञ और उनकी सूझ-बूझ के सामने अपने को अल्पज्ञ मानते हुए विद्वान् सिद्धसेन ने अपनी पूर्व प्रतिभा के अनुसार उनका शिष्यत्व स्वीकार कर लिया। वे मुनि बन गए। उनका दीक्षा नाम कुमुदचंद्र रखा गया। वृद्धिवादी के शिष्य-परिवार में कुमुदचंद्र अत्यंत योग्य एवं प्रतिभावान् शिष्य थे।

स्वकुल को उजागर करने वाले सुयोग्य पुत्र को पाकर जितनी प्रसन्नता एक पिता को होती है, आचार्य वृद्धवादी को भी कुमुदचंद्र जैसे कुशाग्र बुद्धि के धनी, काव्यचेता शिष्य को पाकर उतनी ही प्रसन्नता थी। जैनशासन की सार्वभौम एवं व्यापक प्रभावना शिष्य कुमुदचंद्र के व्यक्तित्व से संभव है, यह सोचकर एक दिन वृद्धवादी ने विद्वान् शिष्य कुमुदचंद्र की नियुक्ति आचार्य पद पर की। उनका नाम कुमुदचंद्र से पुनः सिद्धसेन कर दिया गया जो पहले था। आचार्य वृद्धवादी ने सिद्धसेन को स्वतंत्र विहरण का आदेश देकर स्वयं ने अन्यत्र विहार कर दिया। नीति के अनुसार गुरु अपने शिष्यों की योग्यताओं को दूर रहकर भी परखा करते हैं और देखा करते हैं।

प्रखर वैदुष्य के कारण आचार्य सिद्धसेन की प्रसिद्धि सर्वज्ञ-पुत्र के नाम से हुई।

चित्रकूट में सिद्धसेन ने विविध औषधियों के चूर्ण से बना एक स्तंभ देखा। प्रतिपक्षी औषधियों का प्रयोग कर आचार्य सिद्धसेन ने उसमें एक छेद कर डाला। स्तंभ में हजारों पुस्तकें थीं। अत्यधिक प्रयत्न करने पर आचार्य सिद्धसेन को उस छेद में से एक ही पुस्तक के प्रथम पृष्ठ के पठन से उन्हें सर्षप-विद्या (सैन्य सर्जन विद्या) और स्वर्ण सिद्धि-विद्या, ये दो विद्याएँ उपलब्ध हुई।

सर्षप-विद्या के प्रभाव से मांत्रिक द्वारा जलाशय में प्रक्षिप्त सर्षप कणों के अनुपात में चौबीस प्रकार के उपकरण सहित सैनिक निकलते थे और प्रतिद्वंद्वी को पराभूत कर वे पुनः जल में अदृश्य हो जाते थे।

स्वर्ण-सिद्धि-विद्या के द्वारा मांत्रिक किसी भी प्रकार की धातु को सहजतया स्वर्ण में परिवर्तित कर सकता था।

इन दो विशिष्ट विद्याओं की प्राप्ति से आचार्य सिद्धसेन के मन में उत्सुकता बढ़ी। वे पूरी पुस्तक को पढ़ लेना चाहते थे पर देवी ने आकर उनसे पुस्तक को छीन लिया और उनकी मनोकामना पूर्ण न हो सकी।

आचार्य सिद्धसेन खिन्नमना वहाँ से प्रस्थित हुए और जन-जन को जैन धर्म का बोध प्रदान करते हुए गाँवों, नगरों, राजधानियों में विहरण करते रहे। आचार्य सिद्धसेन की कुशल वाग्मिता से उनकी यशःज्योत्सना विश्व में प्रसारित हुई। मुख-मुख पर उनका नाम गूँजने लगा।

आचार्य सिद्धसेन भ्रमणप्रिय आचार्य थे। वे चित्रकूट से पूर्व दिशा की ओर बढ़े। अनेक ग्राम-देशों में विहरण करते हुए पूर्व में कूर्मारपुर में पहुँचे। कूर्मारदेश का शासक देवपाल था। आचार्य सिद्धसेन से बोध प्राप्त कर वह उनका परम भक्त बन गया। देवपाल की राजसभा में नित्य नवीन एवं मधुर गोष्ठियाँ होतीं। आचार्य सिद्धसेन के योग से उन गोष्ठियों की सरसता अधिक बढ़ जाती थी। राज-सम्मान प्राप्त कर सिद्धसेन का मन उस वातावरण से मुग्ध हो गया और वे वहीं रहने लगे।

किंवदंती के अनुसार वृद्धवादी ने कूर्मार ग्राम में पहुँचकर आचार्य सिद्धसेन की पालकी के नीचे अनेक शिविकावाही पुरुषों के साथ अपना कंधा लगा दिया। अवस्था वृद्ध होने के कारण वृद्धवादी के पाँव लड़खड़ा रहे थे एवं उनकी ओर से सुखापालकी लचक रही थी। आचार्य सिद्धसेन की दृष्टि कृशकाय-वयोवृद्ध वृद्धवादी पर पहुँची और दर्प के साथ वे बोले—

अयमान्दोलिकादण्डः स्कन्धंतव किन्नु बाधति।

रे वृद्ध! इस सुखपालकी का दंड तुम्हारे कंधे में गड़ रहा है? आचार्य सिद्धसेन द्वारा उच्चारित बाधति धातु के प्रयोग पर आचार्य वृद्धवादी चौंके। संस्कृत के 'बाधृङ्ग' धातु का परस्मैपद व्यवहार सर्वथा अशुद्ध है। इस अशुद्ध प्रयोग को परिलक्षित कर वे बोले—

न बाधते तथा दंडः यथा बाधति बाधते।

(क्रमशः)

✦ आदमी में धीरता, वीरता और गंभीरता रहे तो वह महान बन सकता है।

—आचार्यश्री महाश्रमण

मर्यादा महोत्सव पर विशेष

कालजयी संविधान

❐ मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ❐

तेरापंथ धर्मसंघ चार बुनियादी खंभों पर खड़ा एक राजप्रसाद है। आज्ञा अनुशासन मर्यादा और व्यवस्था ये चार ऐसे बुनियादी खंभे हैं, जिन पर किसी तूफान या भूकंप का कोई विशेष प्रभाव नहीं होता। यद्यपि तेरापंथ धर्मसंघ के प्रारंभ से लेकर अब तक इन ढाई सौ वर्षों के इतिहास में कई छोटे-मोटे भूकंप आए जरूर लेकिन आचार्य भिक्षु की आचार साधना एवं तपः साधना का इतना बड़ा प्रभाव कि धर्मसंघ अविचल रूप से आज भी सबको धर्म साधना का प्रसाद रहा है। जिसने भी इससे टकराने का दुस्साहस किया, वह स्वयं अपने अस्तित्व को खोकर काल के गर्त में विलीन हो गया।

तेरापंथ का प्रथम सूत्र है—आज्ञा। भगवान महावीर ने भी तो आज्ञा में धर्म कहा है। जिस कार्य में भगवान की आज्ञा है, वहाँ धर्म है। इसी सूत्र को आचार्य भिक्षु ने प्रतिपादित करते हुए कहा—आज्ञा धर्म अनाज्ञा अधर्म। गुरु की आज्ञा अविचारणीय होती है उस पर अपना दिमाग लगाने की कोई अपेक्षा नहीं होती, उसे समर्पित भाव से स्वीकार करने में हित होता है। एक घटना प्राप्त होती है एक बार एक शिष्य के शरीर में कोढ का रोग हो जाता है। इसका उपाय गुरु जानते थे। जैसे लोहे को लोहा काट देता है ठीक वैसे ही कोढ के जहर को बाहर निकालने के लिए साँप का जहर भी औषध का काम करता है अतः एक साँप को जाते हुए देखकर गुरु ने कहा शिष्य जाओ और उस साँप को नाप कर आओ। शिष्य समर्पित भाव से गया और अपनी बुद्धिबल से उस साँप को नाप कर आ गया। पर गुरु जैसा चाहते थे वैसा हुआ नहीं तो गुरु ने फिर कहा—जाओ शिष्य इस बार साँप के दाँत गिनकर आओ। शिष्य बिना किसी तर्क-वितर्क के समर्पित भाव से गया और साँप को पकड़कर दाँत गिनने की कोशिश की तो साँप ने उसे डस लिया। शिष्य ने आकर सारी स्थिति निवेदित की। गुरु ने कहा शिष्य कोई बात नहीं तुम निश्चित होकर सो जाओ। शिष्य बिस्तर पर लेट गया। गुरु ने उसे कंबल ओढा दिया। थोड़ी ही देर में उस जहर की गर्मी और कंबल की गर्मी से शरीर में कोढ़ के किटाणु धीरे-धीरे बाहर निकलकर कंबल पर तैरने लगे। जब सारे किटाणु निकल गए तो शिष्य पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गया और शरीर कंचन की भाँति दमकने और चमकने लगा। जहाँ गुरु के प्रति सर्वात्मना समर्पण भाव होता है वहाँ पर निश्चित ही शिष्य का हित साधन होता है।

तेरापंथ का दूसरा विकास सूत्र है—अनुशासन! गुरु का अनुशासन शिष्य के लिए कल्याणकारी होता है। विनीत शिष्य गुरु के अनुशासन को अहोभाव से स्वीकार करता है। उसकी गहरी सोच में गुरु कृत अनुशासन ताड़ना-तर्जना नहीं अपितु अमृत तुल्य होता है। वह सोचता है, मैं परम सौभाग्यशाली हूँ, मेरे जीवन विकास के लिए गुरुदेव कितना पुरुषार्थ कर रहे हैं। गुरु का अनुशासन मेरे जीवन को परिमार्जित और परिष्कृत करने वाला है। मैं विनय भाव से गुरु की सेवा उपासना करता रहूँ। यह गुरु का अनुशासन ही मुझे साधना से सिद्धत्व की ओर आरोहण कराने वाला है। किंतु जो शिष्य अविनीत होता है उसका चिंतन सर्वथा इसके विपरीत होता है। वह सोचता है गुरु अनुशासन क्या कर रहे हैं बल्कि मुझे ताड़ना तर्जना! दे रहे हैं, मुझे चपेटा मार रहे हैं। गुरु के मन में मेरे प्रति वात्सल्य भाव नहीं हैं, मेरे प्रति गुरु के मन में रोष भरा है, मेरे हित वंच्छक नहीं है। बार-बार मुझ पर अनुशासन कर रहे हैं, इनके मन में कितनी द्वेषभावना है। ये मेरा कल्याण नहीं चाहते। ऐसी नकारात्मक सोच वाला शिष्य कभी गुरु के अनुशासन को स्वीकार नहीं कर सकता। अतः उसका कल्याण भी संभव नहीं है। तेरापंथ का तीसरा स्वर्णिम सूत्र है—मर्यादा।। वस्तुतः तेरापंथ का प्राण, त्राण है—मर्यादा! मर्यादा से जीवन का कल्याण है। श्रीमद् भिक्षु स्वामी दीर्घ दृष्टा आचार्य थे। वे भावी के ज्ञाता संत थे। उन्होंने धर्मसंघ में साधनारत साधुओं को न्याय, संविभाग मिल सके तथा पारस्परिक प्रेम तथा कलह का वातावरण निर्मित न हो तथा संघ सुव्यवस्थित चल सके इसीलिए इन मर्यादाओं का सूत्रपात किया। यद्यपि इन मर्यादाओं में कुछ शाश्वत है तो कुछ सामायिक है। आचार्य भिक्षु ने अपने सुदीर्घ चिंतन के आधार पर उत्तरवर्ती आचार्य को यह अधिकार दिया कि मैंने जो मर्यादाएँ बनाई हैं उत्तरवर्ती आचार्य समय सापेक्ष उसमें परिवर्तन या संशोधन कर सकते हैं अथवा कोई नई मर्यादाएँ बना सकते हैं। उसे पूरा धर्मसंघ श्रद्धा के साथ स्वीकार करें। यह धर्मसंघ एक आचार, एक विचार और एक आचार्य केंद्रित धर्मसंघ है। किसी भी उत्तरवर्ती आचार्यों को इसकी मूल मर्यादा में परिवर्तन की अपेक्षा नहीं हुई किंतु उत्तर मर्यादाओं में समय-समय पर परिवर्तन या संशोधन भी किया तो नई मर्यादाएँ भी बनाई हैं जो संघीय हित में अपेक्षत है। शिष्य प्रथा को खत्म करने के लिए दीक्षित करने का अधिकार आचार्य भिक्षु ने वर्तमान अनुशास्ता को दिया है। यदि आचार्य की आज्ञा से किसी को कोई दीक्षित करता है तो आचार्य के नाम से करता है तथा जब भी गुरु दर्शन करता है तब उसको गुरु चरणों में समर्पित कर देता है।

आज के युग में पद लिस्सा का भाव भी बहुत बढ़ा हुआ है, भावी आचार्य के लिए किसी की उम्मीदवारी की अपेक्षा नहीं है। आचार्य अपनी कसौटी पर कसकर जो योग्य लगे उसे युवाचार्य के रूप घोषित कर देते हैं। भावी आचार्य के रूप उसकी आचार-निष्ठा, मर्यादा-निष्ठा, गुरु-निष्ठा सर्वोपरि है। इन सारी कसौटियों पर कसकर ही भावी आचार्य की नियुक्ति की जाती है। जिसे पूरा धर्मसंघ अहोभाव के साथ स्वीकार करता है। इन मर्यादाओं के आधार पर ही यह धर्मसंघ निरंतर विकासशील है। विकास का चौथा महनीय सूत्र है—व्यवस्था। जहाँ सामुहिक जीवन है वहाँ व्यवस्था पक्ष की मजबूती अनिवार्य है, जिस संघ, संगठन और संस्थान का व्यवस्था पक्ष जितना मजबूत है वह उतना ही विकास के नए-नए द्वारों को उद्घाटित कर सकता है। जहाँ व्यवस्थाएँ चरमरा जाती है वहाँ संगठन कमजोर हो जाता है और बात-बात में झगड़े-फसाद होते रहते हैं। तेरापंथ का व्यवस्था पक्ष इतना व्यवस्थित है कि किसी को किसी प्रकार की शिकायत का मौका ही नहीं मिलता। यदि कोई सदस्य व्यवस्था को भंग करता है तो उसे उपालंभ के साथ प्रायश्चित भी मिलता है। जहाँ केंद्र में अर्थात् गुरु सन्निधि में रहने वाले साधु-साध्वियों के लिए व्यवस्थाएँ हैं तो बहिर्विहार में विचरने वाले जो भी साधु-साध्वियाँ हैं। अपनी इच्छा अनुसार नहीं कर सकते, जैसी समय सापेक्ष आचार्यश्री व्यवस्था देते हैं उसी अनुसार करना होता है। एक बार जयाचार्य के समय पानी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं हुआ अतः सभी साधुओं को निर्देश दिया कि एक प्याले से अधिक पानी का उपयोग न करें। एक साधु ने इस व्यवस्था का उल्लंघन कर दिया तो उस साधु को उच्छृंखल व्यवहार के कारण उसका संघ से संबंध विच्छेद कर दिया। अतः इस तेरापंथ धर्मसंघ में आचार्यकृत व्यवस्था को स्वीकृत करना सबके लिए अनिवार्य है। पालन नहीं करने पर उसे प्रायश्चित भी करना पड़ता है। इस प्रकार इन चार सुदृढ़ खंभों पर खड़ा यह तेरापंथ का महल है। यदि खंभे मजबूत हैं तो इमारत को कोई भी तूफान या भूकंप कम्पायमान नहीं कर सकते। महानगरों में देखने को मिलता है जिन ऊँची अट्टालिकाओं के खंभे सुदृढ़ होते हैं, उन्हें कोई भी भूकंप धराशायी नहीं कर सकते। वे स्वयं सुरक्षित रहकर उसमें निवास करने वालों के लिए जीवनदायिनी बन जाते हैं। अन्यथा वे जीवन को खतरे में भी डाल सकते हैं। आचार्य भिक्षु ने अपनी दूरगामी सोच को साधनों को साथ जोड़ा तो साथ ही शासना के साथ ही उतना ही मूल्यवान रहा है। उनके द्वारा खींची गई लोह लकीरें रूपी मर्यादाएँ धर्मसंघ की धरोहर हैं। एक बार किसी व्यक्ति ने आचार्य भिक्षु से पूछा—भीखणजी! आपका यह धर्मसंघ कब तक चलेगा?

आचार्य भिक्षु ने सटीक जवाब देते हुए कहा—जब तक धर्मसंघ के साधु-साध्वियाँ आज्ञा, अनुशासन, मर्यादा और व्यवस्था का निष्ठापूर्वक पालन करते रहेंगे तब तक यह धर्मसंघ चलता रहेगा। विकास की नई कहानियाँ लिखता रहेगा और नित नए कीर्तिमान गढ़ता रहेगा। आज यह तेरापंथ न केवल भारत में बल्कि विश्व में धर्म के पर्याय के रूप में अपनी पहचान बनाए हुए है। धर्मसंघ का यह सौभाग्य रहा है कि जब-जब जैसे आचार्यों की अपेक्षा हुई है वैसे ही आचार्यों का नेतृत्व मिलता रहा है। आचार्यों ने भी समय सापेक्ष नए-नए अवदान देकर धर्मसंघ को प्रगति के पथ पर अग्रसर करते रहे हैं। आज तेरापंथ धर्मसंघ सीमित दायरे में नहीं रहकर संपूर्ण मानव जाति के विकास के लिए कार्यरत हैं। जहाँ आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान और जीवन-विज्ञान का अवदान देकर मानवता की सेवा में अपनी कर्मजा शक्ति, श्रम और समय का सदुपयोग किया है वहीं आचार्य महाप्रज्ञ और वर्तमान एकादशम अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण की अहिंसा यात्रा से सुदूर प्रांतों के साथ भूटान व नेपाल में भी जनता जनार्दन न केवल जैन धर्म से परिचित हुई बल्कि लाभान्वित भी हुई है।

आचार्यों की आज्ञा निर्देश से सैकड़ों जीवनदानी साधु व साध्वियाँ अपनी आत्मसाधना करते हुए निरंतर पदयात्रा से जन-जीवन को मानवीय मूल्यों की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। साधु-साध्वियों के अतिरिक्त अनेक-अनेक व्यक्ति आचार्यप्रवर के आदेशानुसार जनता में कार्यरत हैं। धन्य हैं वे लोग जो इस धर्मसंघ से जुड़कर तथा सेवा का महान व्रत लेकर कार्य कर रहे हैं। शासना और साधना तब चलती है जब व्यक्ति अपने स्वार्थ को गौण कर निस्वार्थ भावना से संघीय सेवा में उतरता है तथा अपने जागृत चैतन्य को सम्मुख रखकर आगे बढ़ता रहता है। यह धर्मसंघ कोई बहुत पुराना नहीं है। मात्र ढाई सौ वर्षों का इसका उज्ज्वल इतिहास है किंतु इतने कम समय में जो विकास के द्वार उद्घाटित हुए हैं उसमें सबसे विलक्षण बात है धर्मसंघ का कार्य कौशल, साधु-साध्वियों तथा कार्यकर्ताओं का श्रम तथा आज्ञा, मर्यादा, अनुशासन तथा व्यवस्था का सुचारु रूप से पालन ही महत्त्वपूर्ण है।

मर्यादा महोत्सव के संदर्भ में गीत

● शासनश्री मुनि विजय कुमार ●

करें हम संघ को वंदन, तन-मन करें अर्पण,
है यह प्राण, है यह त्राण
जय संघ, जय संघ
उड़ान : भिक्षु उद्यान में देखो, खिले ये फूल हैं प्यारे,
शुभ्र आकाश में जैसे, जगमगाते हुए तारे।।

भिक्षु के संघ का साया, सदा हमको सुहाता है,
आर्य महाश्रमण का साया, सदा हमको सुहाता है,
संघ को है भक्ति भरी वंदना,
भिक्षु को है भक्ति भरी वंदना,
वंदना ओ भक्ति भरी वंदना।।स्थायीपद।।
संघ यह हमारा बेजोड़ है, भिक्षु के तप का निचोड़ है,
महिमा है जग में निराली, सबमें छायी खुशहाली,
फलता रहे सदा है भावना, वंदना।।१।।

मर्यादा संघ का आधार है, पाता सदा नया निखार है,
मर्यादा एकता की कड़ी, हम सब हैं मोतियों की लड़ी,
प्रगति का मूल महोत्सव बना, वंदना।।२।।

संघ है यह गंगा ज्यों पावन, रहता सदा यहाँ सावन,
इसमें जीएँगे, मरेंगे, सर्वस्व अर्पण करेंगे,
सबके हृदय की है कामना, वंदना।।३।।

संघ को समपित हम सभी, इसमें है सुस्थित हम सभी,
आएगी परीक्षा की घड़ी, कर देंगे कुर्बानी बड़ी,
संघ से जुड़े हुए हैं तन्मना, वंदना।।४।।

अनुशासन पर्व मनाएँ, इतिहास नूतन बनाएँ,
महाश्रमण-शासन में फूलें, संयम के झूले में झूलें,
संघ की करें 'विजय' आराधना, वंदना।।५।।

लय : हमें इस देश की धरती सदा प्राणों से प्यारी है।

तेरापंथ धर्मसंघ के उत्सव मर्यादा महोत्सव पर विशेष

तेरापंथ का गौरवशाली उत्सव है - मर्यादा महोत्सव

❒ मुनि कमल कुमार ❒

जैन धर्म के मुख्य दो संप्रदाय हैं—दिगंबर और श्वेतांबर। श्वेतांबर में तीन संप्रदाय हैं—मूर्तिपूजक, स्थानकवासी और तेरापंथ। तेरापंथ जैन धर्म का सबसे छोटा और जैन धर्म का नया संस्करण है। इस धर्मसंघ की शुरुआत आचार्य भिक्षु ने वि०सं० १८१७ आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा के दिन राजस्थान के मेवाड़ संभाग के केलवा नगर में तेले की तपस्या से की।

आचार्य भिक्षु का लक्ष्य पंथ चलाने का नहीं बल्कि शुद्ध साधना का था। उस समय साधुओं में शिथिलाचार बढ़ने लगा था। सब अपने-अपने शिष्य बनाने और स्थान बनाने में लगे हुए थे। जनता की साधुओं के प्रति श्रद्धा घटती जा रही थी। ऐसी विषम स्थिति को देखकर आचार्य भीखणजी ने विक्रम संवत् १८१६ चैत्र सुदी नवमी के दिन मारवाड़ के कांठा संभाग के भमड़ी नगर से अभिनिष्क्रमण किया। उस समय आपको आहार-पानी स्थान, वस्त्र आदि के लिए काफी संघर्ष सहन करना पड़ा। परंतु आपका फौलादी संकल्प आपके मनोबल को डिगा नहीं सका।

ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, लोगों में आपके प्रति श्रद्धा बढ़ने लगी। आपकी वैराग्यवृत्ति एवं साधना-आराधना को देखकर आने वाले आपके श्रद्धावान बनते हुए और श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ती गई एवं दीक्षाओं का क्रम भी आरंभ हो गया। वि०सं० १८३२ में आपने संघ की भी वृद्धि देखकर उसकी सुव्यवस्था के लिए प्रथम लेखपत्र लिखा और अपने उत्तराधिकारी का विधिवत चयन किया। उसके बाद संघ की सुव्यवस्था के लिए समय-समय पर कई लेख पत्र लिखे। अंतिम मर्यादा पत्र वि०सं० १८५६ माघ शुक्ला सप्तमी के दिन लिखा गया था। उसी मर्यादा पत्र को आधार मानकर चतुर्थ आचार्य श्रीमद् जयाचार्य ने माघ शुक्ला सप्तमी के दिन विधिवत मर्यादा महोत्सव मनाना प्रारंभ किया। तब से लेकर आज तक केवल एक महोत्सव को छोड़कर ये उत्सव व्यवस्थित रूप से मनाया जा रहा है। वह एक बीकानेर में राज्य शोक होने पर विधिवत नहीं माना गया।

१५८ वर्षों से मनाए जाने वाले मर्यादा महोत्सव का आकर्षण संघ के आबाल वृद्ध में देखते ही बनता है। देश-विदेश में रहने वाले साधु-साध्वी, समण-समणी व श्रावक-श्राविका इस महोत्सव में पहुँचकर बाग-बाग हो जाते हैं।

महोत्सव पर तीन दिवसीय कार्यक्रम होता है। बसंत पंचमी से सप्तमी तक चलने वाले कार्यक्रम की शुरुआत तेरापंथ धर्मसंघ के वृद्ध रुग्ण साधु-साध्वियों की चाकरी की घोषणा से होती है। तेरापंथ संघ में दीक्षित होने वाले साधु-साध्वियों को जीवन पर्यंत सेवा-सुश्रुषा की कोई चिंता नहीं रहती। आचार्य स्वयं उचित, याचित, अयाचित व्यवस्था करते हैं, यह अपने आपमें एक उदाहरण है।

मर्यादा महोत्सव पर चार तीर्थ को वर्ष भर के लिए नई ऊर्जा की प्राप्ति होती है। गुरुदेव वर्ष भर में करणीय कार्य की दिशा प्रदान करते हैं। साधु-साध्वियों की सारणा-वारणा भी होती है। जिससे संघ का प्रत्येक सदस्य ज्ञानवान और प्राणवान बना रहे। जिस परिवार, समाज और संगठन में सारणा-वारणा नहीं होती वह परिवार, समाज और संगठन दीर्घजीवी नहीं बनता। तेरापंथ समाज में यह मर्यादा महोत्सव इस त्रिपदी के कारण स्वस्थ और विश्वस्त बना हुआ है।

मर्यादा महोत्सव पर चातुर्मासों की नियुक्तियाँ भी होती हैं। सभी लोग अपनी-अपनी क्षेत्र की अर्ज के साथ प्रस्तुत होते हैं, जिन्हें जिस साधु-साध्वियों का चौमासा मिलता है उसे अपना अहोभाग्य समझते हैं। ये तेरापंथ संघ की बहुत बड़ी विशेषता है। यहाँ केवल नातीलों के सिवाय किसी का व्यक्तित्व चौमासा नहीं माँग सकते हैं। कोई अगर ऐसी भूल करता है, तो उसे उपालंभ या दंड भी मिल सकता है। ऐसा अतीत में हुआ है और भविष्य में भी संभव है। यहाँ केवल गुरुचरणों में अपने क्षेत्र में चातुर्मास की अर्ज की जा सकती है। आचार्य जैसा उपयुक्त समझते हैं, वैसा निर्णय कर किसी भी साधु-साध्वियों का चौमासा फरमा सकते हैं। निर्णय सिर्फ आचार्य के हाथ हैं, उसमें कोई भी हस्तक्षेप नहीं कर सकता। इन्हीं सब विशेषताओं के कारण तेरापंथ धर्मसंघ पूरे जैन समाज में अनुपम और अद्वितीय है।

इस वर्ष का मर्यादा महोत्सव वीरभूमि बीदासर में महातपस्वी, महामनस्वी, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी के पावन सन्निध्य में मनाया जा रहा है। आठ वर्षों के बाद वृहद् मर्यादा महोत्सव होने से साधु-साध्वियों एवं श्रावक-श्राविकाओं में विशेष उत्साह दृष्टिगोचर हो रहा है।

अष्टवर्षीय गुरुदेव की देश-विदेश में जो अहिंसा यात्रा हुई यह अपने आप में अनुपम अद्वितीय और धर्मसंघ की महत्ता को बढ़ाने वाली सिद्ध हुई है। गाँव-गाँव, घर-घर में चर्चा का विषय बनी है। इस यात्रा से आबाल वृद्धों को ही नहीं शिक्षित व्यापारी कर्मचारी राजनेता धार्मिक नेताओं पर भी अच्छा प्रभाव देखने-सुनने को मिला। गुरुदेव की प्रबल पुण्याई और पुरुषार्थ के सामने सभी नतमस्तक हो गए।

बीदासरवासियों को सैकड़ों साधु-साध्वियों की बीदासरवासियों को सैकड़ों साधु-साध्वियों की सेवा दर्शन उपासना का सुंदर अवसर प्राप्त होगा। कोरोना महामारी के कारण गुरुदेव के प्रवचन सेवा उपासना का नजदीक से लाभ मिलना कठिन है। परंतु वर्चुअल प्रवचनसे सबको प्रेरणा पाथेय प्राप्त हो सकेगा।

मर्यादा महोत्सव तेरापंथ का विशेष उत्सव है। सैकड़ों साधु-साध्वियों के एक साथ दर्शन होने से लोग संघबद्ध आते हैं और अन्य समाज के लिए भी केवल दर्शनीय ही नहीं प्रशंसनीय और अनुकरणीय है, ऐसे विचार भी सुनने को मिलते हैं।

संघ करता है उन्हें प्रणाम

❒ नचिकेता मुनि आदित्य कुमार ❒

संघ करता है उन्हें प्रणाम।
संघ संघपति के प्रति जिनका योगदान निष्काम।।

स्थिरयोगी-समयज्ञ-मनीषी, एक-एक से बढ़ आचार्य,
कायम मूल मान्यता रख, नव परिवर्तन जिनको स्वीकार्य।
भिक्षु की मर्यादाओं का यह विकास परिणाम।।
संघ करता है उन्हें प्रणाम।।

हुए पूर्ण वैराग्य भाव से, दीक्षित जो जो मुनि-सतियाँ,
रहे समर्पित गुरुचरणों में, बनकर उनकी प्रतिकृतियाँ।
अहं विलय की गहन साधना करते आठों याम।।
संघ करता है उन्हें प्रणाम।।

वृद्ध ग्लान गण के सदस्य की, कर अग्लान-हृदय सेवा,
चित्त समाधि पहुँच पाते कर्म निर्जरा का मेवा।
सेवाभावी पाता गण में इज्जत-सुख-आराम।।
संघ करता है उन्हें प्रणाम।।

दृढ़ आचार कुशल व्यवहारी चिंतक वक्ता व्याख्यानी,
ज्ञानी-ध्यानी कलाकार कवि, आगमजात अवधानी।
एक-एक साधु-साध्वी के, विकसित बहुआयाम।।
संघ करता है उन्हें प्रणाम।।

श्रावक और श्राविकाओं का कैसे गण भूले बलिदान,
तूफानों में रहे अडिग जो उन पर हमको है अभिमान।
सर्वांगीण विकास करें हम, बढ़ें सदा अविराम।
आत्मसाधना लक्ष्य हमारा, पाएँ मुक्ति मुकाम।।
संघ करता है उन्हें प्रणाम।।

लय : संघ का गौरव गाएँ हम/म्हारो प्यारो राजस्थान---

नवीन साहित्य भवन - साहित्य सदनम् का लोकार्पण

लाडनूं।

जैन विश्व भारती की महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति—साहित्य को तकनीकी एवं भौतिक साहित्य संसार में एक नवीन स्थान प्रदान करने के लिए साहित्य भवन का चिंतन किया गया, जिसका लोकार्पण परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी के पावन सान्निध्य में किया गया।

जैन विश्व भारती में अपनी तरह का यह एक विशिष्ट उपक्रम स्थापित किया गया है जिसमें पुस्तकों के विक्रय, पठन एवं ई-प्रारूप में भी उपलब्धता की व्यवस्था की गई है। भव्य कांच के आवरण के साथ तैयार यह साहित्य सदनम् जैन विश्व भारती में आने वाले प्रत्येक पाठक के लिए आकर्षण का केंद्र बना हुआ है।

साहित्य सदनम् के निर्माण कार्य सहयोगी यू०एस०ए० प्रवासी स्वतंत्र बिमला जैन द्वारा आचार्य महाश्रमण षष्टिपूर्ति वर्ष एवं अमृत महोत्सव के अवसर पर सादर समर्पित किया गया है। स्वतंत्र जैन वर्तमान में जैन विश्व भारती के ह्यूस्टन सेंटर के प्रभारी भी हैं एवं विगत लंबे समय से जैन विश्व भारती की गतिविधियों से अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। विदेश के केंद्र में समणीवृंद की व्यवस्था एवं अन्य संघीय गतिविधियों में आपका महत्त्वपूर्ण सहयोग प्राप्त रहता है।

साहित्य सदनम् के लोकार्पण के अवसर पर आचार्यप्रवर ने फरमाया कि साहित्य का प्रकाशन जैन विश्व भारती की एक अति महत्त्वपूर्ण गतिविधि है एवं बड़ा उपक्रम है। आचार्यश्री ने अधिकाधिक स्वाध्याय की भी प्रेरणा करवाई। जैन विश्व भारती के अध्यक्ष मनोज कुमार लुनिया ने साहित्य भवन के निर्माण संबंधी जानकारी पूज्यप्रवर को निवेदित की। जैन विश्व भारती के मुख्य न्यासी अमरचंद लुंकड़, मंत्री प्रमोद बैद साहित्य विभागाध्यक्ष पुखराज बड़ोला एवं सह-संयोजक विजयराज आंचलिया भी उपस्थित रहे। उल्लेखनीय है कि आई०ए०एस डॉ० जितेंद्र सोनी द्वारा भी साहित्य सदनम् का अवलोकन किया गया।

नववर्ष पर कैलेंडर ही नहीं, बल्कि जीवन बदलें

चंडीगढ़।

जनवरी, २०२२ आशा और नई उम्मीदें लेकर आपके लिए आया है। साल २०२१ अब बीत चुका है अब हमें उसकी परवाह करना छोड़ देना चाहिए। बीता हुआ वक्त कैसा भी रहा हो, चाहे वो अच्छा रहा हो अथवा बुरा रहा हो। हर हाल में उसे छोड़कर आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। इस नए साल पर आप खुद से एक वादा कीजिए कि आप बीते हुए वक्त को भूल खुद के भविष्य में आने वाले समय के बारे में निर्णय लेंगे। भविष्य के बारे में विचार करेंगे। यह विचार मनीषी संत मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने अणुव्रत भवन में नव वर्ष के अवसर पर आयोजित सभा को संबोधित करते हुए कहे।

मुनिश्री ने मंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम प्रारंभ किया। कार्यक्रम में वेद प्रकाश जैन, प्रदीप जैन, सुशील नाहर, रवि चोपड़ा, राकेश तनेजा, विजय शर्मा, विजय गोयल, शांता चोपड़ा, विनोद सेतिया आदि ने मनीषी संत को शुभकामनाएँ दी।

मुनिश्री ने आगे कहा कि नया साल एक नई शुरुआत को दर्शाता है और हमेशा आगे बढ़ने की सीख देता है। पुराने साल में हमने जो भी किया, सीखा, सफल या असफल हुए उससे सीख लेकर, नई उम्मीद के साथ आगे बढ़ना चाहिए। मुनिश्री ने कहा कि नया वर्ष, नई उम्मीदों, आशाओं व खुशियों की दस्तक दे चुका है। हम पुराने वर्ष की खट्टी-मीठी यादों को अतीत में ढकेल नए वर्ष का स्वागत करें।

नए वर्ष कार्यक्रम

विशाखापट्टनम।

रॉयल गार्डन में साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में नववर्ष के उपलक्ष्य में वृहद मंगल पाठ व सपरिवार पौषध करने वालों को सम्मानित करने का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल व कन्या मंडल के संयुक्त मंगलाचरण से हुआ, तेयुप के मंत्री चंद्रकांत पारख ने अपने आवास पर साध्वीश्रीजी का भावभीना स्वागत किया।

साध्वीश्री जी ने विशिष्ट अनुष्ठान करवाया। साध्वी कल्पयशाजी ने मंच संचालन करते हुए कहा कि वर्तमान युग में हमें सबसे ज्यादा किसी चीज की आवश्यकता है तो वो है अध्यात्म की। जितना हमारा अध्यात्म का जागरण होगा उतना ही हम सुख-शांति व सकून की जिंदगी जी सकेंगे।

साध्वी रश्मिप्रभा जी ने नूतन वर्ष पर गीतिका प्रस्तुत की। सभा के अध्यक्ष मनोज दुगड़ ने गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। महासभा के प्रभारी विमल कुंडलिया ने आभार व्यक्त किया। सपरिवार परीक्षा देने वालों को व सपरिवार पौषध करने वालों को सभा परिवार द्वारा सम्मानित किया गया। लगभग १६० व्यक्तियों ने जैन विद्या की परीक्षा दी थी, जिसमें ३५ परिवारों ने सपरिवार परीक्षा दी।

ज्ञानशाला के विविध आयोजन

ज्ञानशाला द्वारा शिशु संस्कार बोध परीक्षा

पालघर।

तेरापंथ भवन में सभा द्वारा संचालित ज्ञानशाला द्वारा शिशु संस्कार बोध परीक्षा का आयोजन किया गया। सभा मंत्री दिनेश राठौड़, परीक्षा केंद्र व्यवस्थापक सुखलाल तलेसरा, महाप्रज्ञ जोन सह-संयोजिका विजया तलेसरा, ज्ञानशाला संयोजक हितेष सिंघवी, सह-संयोजक प्रदीप सिंघवी, मुख्य प्रशिक्षिका सविता सिंघवी आदि पदाधिकारियों की उपस्थिति रही।

णमोक्कार महामंत्र के पश्चात केंद्र व्यवस्थापक सुखलाल तलेसरा व मुख्य प्रशिक्षिका सविता सिंघवी ने प्रश्न-पत्र का लिफाफा खोला। ज्ञानार्थियों की सुचारु रूप से व्यवस्था की गई। परीक्षा संचालन के दौरान आकस्मिक निरीक्षण हेतु महाप्रज्ञ जोन की संयोजिका करुणा ढालावत (बोईसर) पधारकर परीक्षा गतिविधि का जायजा लिया।

संचालन के बारे में उन्होंने समाधान व्यक्त किया। शिशु संस्कार बोध में भाग-१ से ५ तक ३१ ज्ञानार्थियों की उपस्थिति रही। ६ प्रशिक्षिकाओं द्वारा परीक्षा ली गई। ज्ञानशाला कमेटी सदस्य प्रकाश बाफना व दिलीप परमार का विशेष योगदान रहा।

ज्ञानशाला शिशु संस्कार परीक्षा

राजाराजेश्वरी नगर।

तेरापंथ सभा, राजाराजेश्वरी नगर के अंतर्गत चल रही ज्ञानशाला की वार्षिक परीक्षा का आयोजन किया गया। केंद्र द्वारा भेजा गया प्रश्न-पत्र का लिफाफा तेयुप अध्यक्ष सुशील भंसाली, मंत्री विकास छाजेड़ एवं महिला मंडल की वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुमन पटावरी के सम्मुख खोला गया। शिशु संस्कार भाग-१ से ५ तक की कक्षाओं की मौखिक परीक्षा हुई। जिसमें ८ प्रशिक्षिका बहनों एवं दो सहयोगी बहनों ने परीक्षा ली।

संयोजिका प्रिया छाजेड़ एवं अन्य शिक्षिका बहनें अनिता दुगड़, वंदना भंसाली, सीमा सहलोत, अमिता छाजेड़, सपना छाजेड़, नीतू बाफना, जयंती कोठारी, विविध बोहरा, तनीषा सहलोत ने श्रम नियोजित कर बच्चों को स्वाध्याय करवाया एवं परीक्षा के संचालन में पूर्ण सहयोग किया।

ज्ञानशाला के कुल ४७ बच्चों ने परीक्षा में भाग लिया। शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी के सतत आध्यात्मिक पाथेय से बच्चों में ज्ञान का अच्छा विकास हुआ। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष मनोज डागा के नेतृत्व में राजाराजेश्वरी नगर के तेरापंथ भवन में ज्ञानशाला सुचारु रूप से चल रही है।

ज्ञानशाला - शिशु संस्कार बोध परीक्षा का आयोजन

राजलदेसर।

केंद्रीय ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के निर्देशन में पूरे भारत में ज्ञानार्थी परीक्षा का आयोजन हुआ। जिसमें राजलदेसर ज्ञानशाला द्वारा ज्ञानार्थी परीक्षा 'शिशु संस्कार बोध परीक्षा' का आयोजन किया गया। तेरापंथ भवन में आयोजित परीक्षा में शिशु संस्कार बौद्ध भाग-१ में ६, भाग-२ में ४, भाग-३ में ४ तथा भाग-४ में ४, कुल १८ ज्ञानार्थियों ने दृढ़-मनोबल के साथ पूरी तैयारी एवं उत्साहपूर्वक भाग लिया।

ज्ञानशाला प्रशिक्षिका हेमलता घोषल, निर्मला जैन एवं मोनिका बेद ने परीक्षा ली। परीक्षा व्यवस्थापिका एवं तेममं अध्यक्षा प्रेम देवी विनायकिया एवं तेरापंथी सभा के सहमंत्री कमल सिंह दुगड़ द्वारा प्रश्न पत्रों का लिफाफा खोला गया। परीक्षा का आरंभ मंगलपाठ एवं नवकार मंत्र सुनने के बाद किया गया। परीक्षा के बाद ज्ञानार्थी बच्चों को अल्पाहार दिया गया।

ज्ञानशाला शिशु संस्कार परीक्षा

दहिसर (मुंबई।)।

केंद्रीय स्तर द्वारा आयोजित शिशु संस्कार बोध की परीक्षा दहिसर ज्ञानशाला में आयोजित हुई। १६ ज्ञानार्थियों ने ऑफलाइन परीक्षा दी।

ज्ञानशाला प्रभारी रोहित भाई मोदी, तेयुप अध्यक्ष अंकित खिमेसरा, चेतन बोहरा व महिला मंडल संयोजिका रेखा डूंगरवाल सह-संयोजिका चंदा कच्छारा और ६ प्रशिक्षिका बहनों की उपस्थिति में परीक्षा के पेपर का लिफाफा खोला गया। बड़े ही हर्ष व प्रमाणिकता के साथ सभी ज्ञानार्थियों ने परीक्षा संपूर्ण की।

ज्ञानशाला परीक्षा आयोजित

नोखा।

तेरापंथी महासभा संस्था शिरोमणी द्वारा संपूर्ण देश में ज्ञानशाला संचालित है। बच्चों में सद्संस्कार आएँ अनुशासन-मर्यादा और जैन धर्म को समझें, जानें, प्रयोग में लाए यह शिक्षा शासन गौरव साध्वी राजीमती जी ने बच्चों को ज्ञानशाला परीक्षा से पूर्व मंगलपाठ श्रवण कराते हुए दी।

महासभा प्रभारी इंदरचंद बैद ने बताया कि ४५ परीक्षार्थी बच्चों ने परीक्षा दी। प्रशिक्षिका सुमन मालू, विभा आंचलिया, सरिता बैद, प्रियंका पारख ने परीक्षाएँ ली। व्यवस्था संभाली तेरापंथ सभा अध्यक्ष हनुमानमल ललवाणी, मंत्री इंदरचंद बैद, ज्ञानशाला प्रभारी महावीर नाहटा, मनोज घीया आदि उपस्थित रहे।

ज्ञानशाला ज्ञानार्थी परीक्षा

उदयपुर।

तेरापंथी सभा, ज्ञानशाला उदयपुर द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन, महाप्रज्ञ विहार में ज्ञानार्थी परीक्षा का आयोजन किया गया। पेपर का लिफाफा सभा मंत्री विनोद कच्छारा द्वारा खोला गया। २२ प्रशिक्षिकाओं द्वारा १० रूम में ५७ बच्चों की ऑफलाइन एवं ऑनलाइन परीक्षा ली गई। परीक्षा के दौरान मास्क एवं सेनेटाइजेशन का प्रयोग किया गया। ऑफलाइन परीक्षा देने वाले बच्चों को अभिभावकों के साथ बुलाया गया। परीक्षा में शिशु संस्कार बोध भाग-१ के कुल १२ ज्ञानार्थियों ने, शिशु संस्कार बोध भाग-२ में कुल १२ ज्ञानार्थियों ने, शिशु संस्कार भाग-३ में कुल १६ ज्ञानार्थियों ने, शिशु संस्कार बोध भाग-४ में कुल ६ ज्ञानार्थियों ने परीक्षा दी।

शिशु संस्कार बोध भाग-५ में ५ ज्ञानार्थियों ने ऑफलाइन परीक्षा दी। परीक्षार्थियों की कुल संख्या ५७ रही। सभाध्यक्ष अर्जुन खोखावत, क्षेत्रीय संयोजिका कविता बड़ाला, संयोजिका सुनीता बैंगानी, परीक्षा केंद्र व्यवस्थापक प्रतिभा इंटोदिया, सह-संयोजिका संगीता चपलोत, संगीता पोरवाल सहित अनेक जनों एवं अभिभावकों के सहयोग से परीक्षा का सफल आयोजन किया जा सका।

बच्चों ने दी ज्ञानशाला में परीक्षा

भीम।

भीम कस्बे में तेरापंथी महासभा ज्ञानशाला प्रकोष्ठ एवं भीम तेरापंथ सभा के निर्देश पर ज्ञानशाला परीक्षा का आयोजन परीक्षा प्रभारी तेयुप अध्यक्ष महेंद्र कोठारी एवं सहप्रभारी तेयुप मंत्री कमलेश मुणोत के व्यवस्था में ली गई। परीक्षा प्रभारी तेयुप अध्यक्ष महेंद्र कोठारी ने बताया कि तेरापंथ सभा अध्यक्ष गौतम चंद भटेवरा एवं तेरापंथ सभा मंत्री भरत हिंगड़ के समक्ष सभा अध्यक्ष एवं सभा मंत्री द्वारा परीक्षा पेपर के लिफाफे खुलवाए गए। इसके पश्चात मुख्य प्रशिक्षिका ममता हिंगड़, प्रशिक्षिका लीला भटेवरा, सरिता कोठारी, ममता गन्ना द्वारा ज्ञानशाला के बच्चों को अलग-अलग बिठाकर भाग-१, २, ३, ४ एवं ५ की परीक्षा बच्चों से ली गई। बच्चों ने परीक्षा में बढ़-चढ़कर भाग लिया। ज्ञानशाला परीक्षा प्रभारी एवं तेयुप अध्यक्ष महेंद्र कोठारी ने बताया कि तेरापंथी महासभा ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के निर्देश पर संपूर्ण भारत देश में ३५१ ज्ञानशाला केंद्रों पर एक ही दिन एक ही समय परीक्षा आयोजित की गई। वहीं परीक्षा के दौरान ज्ञानशाला भीम की सह-संयोजिका टीना मुणोत, सिद्धि कोठारी, दीपिका हिगड़ ने भी परीक्षा के दौरान सहयोग प्रदान किया।

ज्ञानशाला ज्ञानार्थी परीक्षा

जलगाँव।

तेरापंथी महासभा ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के तत्त्वावधान में संपूर्ण भारत एवं विदेशों में एक साथ आयोजित ज्ञानशाला की मौखिक परीक्षा जलगाँव में भी संपन्न हुई। कुल ४४ बच्चों ने बहुत ही उत्साह के साथ परीक्षा में अपनी सहभागिता दर्ज कराई।

प्रश्न पत्र खोलते समय सभा अध्यक्ष माणकचंद बैद, मंत्री मनोज पुगलिया, सहमंत्री पवन सिंघी, ज्ञानशाला संयोजक नवरत्न चोरड़िया, पंकज लोढ़ा एवं ज्ञानार्थियों की परीक्षा लेने के लिए आमंत्रित पूर्व अध्यक्ष संतोष देवी छाजेड़, पूर्व अध्यक्ष मीनाक्षी देवी बैद, कन्या मंडल प्रभारी शशि सुराणा, पूर्व ज्ञानशाला प्रशिक्षिका हैप्पी मितेश बाफना एवं जलगाँव ज्ञानशाला मुख्य प्रशिक्षिका विनीता समदरिया, प्रशिक्षिकाएँ मोनिका छाजेड़, मैना देवी छाजेड़, सुषमा चोरड़िया उपस्थित रहे।

कार्यक्रम को सफल बानाने में कन्या मंडल से कुमारी दिशा छाजेड़, प्रियंका समदरिया व ज्ञानशाला के सह-संयोजक नीरज समदरिया, आदित्य समदरिया का श्रम रहा।

शिशु संस्कार बोध की परीक्षा

अमराईवाड़ी-ओढ़व।

तेरापंथी सभा के निर्देशन में अमराईवाड़ी ज्ञानशाला में शिशु संस्कार बोध की परीक्षा तेरापंथ भवन में आयोजित की गई।

उपासिका मंजु देवी गेलड़ा के द्वारा नमस्कार महामंत्र उच्चारण से सभा में सभी परीक्षार्थियों को शुभकामनाएँ दी गई। ज्ञानशाला परीक्षा व्यवस्थापिका लक्ष्मी सिसोदिया, ज्ञानशाला संयोजक राजेंद्र बाफना, सह-संयोजक नरेंद्र दुगड़ एवं मुख्य प्रशिक्षिका आरती दुगड़ की उपस्थिति में पेपर खोले गए।

ज्ञानशाला सभा अध्यक्ष रमेश पगारिया तथा अन्य सभी प्रशिक्षिकाओं की सराहनीय सहभागिता से परीक्षा का आयोजन व्यवस्थित रहा। क्षेत्री संयोजिका मनीता चोपड़ा एवं सह-संयोजिका आशा खाब्या के द्वारा निरीक्षण किया गया।

मर्यादा महोत्सव पर विशेष

मर्यादा

● मुनि जम्बू कुमार ●

मर्यादा
बंधन नहीं,
निर्बंध है।
मर्यादा
द्वंद्व नहीं,
निर्द्वंद्व है।
मर्यादा
संघर्ष नहीं,
उत्कर्ष है।
मर्यादा
हेय नहीं,
आदेय है।
मर्यादा
परिहास नहीं,
आश्वास है।
मर्यादा
दल-दल नहीं,
दिव्य कमल है।
मर्यादा
हलाहल नहीं,
गंगाजल है।
मर्यादा
क्रंदन नहीं,
स्तवन है।
मर्यादा
साधारण नहीं,
असाधारण है।
व्यवहार व निश्चय में
पथदर्शन है,
निदर्शन है,
दिग्दर्शन है,
कनेक्शन है,
सुदर्शन है,
श्रेष्ठ है, भव्य है।
विरल है, विलक्षण है।
अपूर्व है, प्रणव है।
मर्यादा
धर्म है, धर्म है।

ज्ञानशाला शिशु संस्कार बोध परीक्षा

नालासोपारा।

ज्ञानशाला में केंद्रीय स्तर पर शिशु संस्कार बोध की परीक्षा का आयोजन हुआ। जिसमें २१ ज्ञानार्थियों ने परीक्षा दी एवं पाँच प्रशिक्षक बहनों ने परीक्षा ली। कुल ६ प्रशिक्षिका बहनों की उपस्थिति रही।

सभा के मंत्री लक्ष्मीलाल मेहता व सभा के सहमंत्री पारस बाफना की विशेष रूप से उपस्थिति रही। परीक्षा देने वाले सभी बच्चों को पारितोषिक वितरण किए गए।

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

रक्तदान शिविर का आयोजन

उधना।

तेयुप, उधना द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। रक्तदान में सहयोगी संस्था मेढ क्षत्रिय स्वर्णकार समाज नवयुवक मंडल का भी अच्छा योगदान प्राप्त हुआ। संयोजक कमलेश बाफना की जागरूकता की वजह से, समाज के एक सम्मेलन में कैंप का आयोजन हो पाया और आगे के लिए एक नया प्रारूप बना, तेयुप, उधना की ओर से निवर्तमान अध्यक्ष अरुण चंडालिया एवं युवा शक्ति ने उपस्थित होकर सभी रक्तदाताओं को प्रोत्साहित किया।

सभी रक्तदाताओं के प्रति मंगलकामना। नवसारी परिषद, अध्यक्ष प्रकाश काल्या एवं ब्लड बैंक का आभार व्यक्त किया। रक्तदान शिविर में कुल २६ यूनिट रक्तदान हुआ।

दो दिवसीय संपूर्ण शारीरिक स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन

जसोल।

तेयुप के तत्त्वावधान में विश्वस्तरीय थायरो केयर (न्यूक्लियर) एवं जी०डी० प्रेवेंटिक केयर लेब मुंबई द्वारा २ दिवसीय विशाल संपूर्ण शारीरिक स्वास्थ्य जाँच शिविर स्थानीय पुराना ओसवाल भवन, जसोल में आयोजित हुआ। शिविर संयोजक व तेयुप मंत्री दिनेश वडेरा ने बताया कि मात्र एक ब्लड सेंपल से पूरे शरीर की सामान्य एवं विशेष जाँचें की गई। जिसमें दो दिन में कुल २१ मरीजों की जाँच की गई। साथ ही इस शिविर में जाँच रिपोर्ट का हेल्थ एक्सपर्ट द्वारा परामर्श निःशुल्क भी किया गया।

इस जाँच शिविर को लेकर जसोल के पूर्व सरपंच भंवरलाल भंसाली, तेरापंथ सभा पूर्व मंत्री संपतराज चौपड़ा, सभा सहमंत्री कांतिलाल ढेलड़िया, महावीर इंटरनेशनल बालोतरा के अध्यक्ष जवेरीलाल मेहता, पूर्व अध्यक्ष पवन नाहटा, पूर्व सचिव दलपत जैन, पूर्व तेयुप अध्यक्ष प्रवीण भंसाली, जसोल तेयुप अध्यक्ष जितेंद्र मांडोत, अंकित छाजेड़ एवं लेब टेक्नीशियल विकास परमार सहित सभी संस्थाओं से पदाधिकारी, सदस्य एवं कार्यकर्ताओं से अपनी सेवाएँ प्रदान की।

फिट युवा-हिट युवा

भुज।

फिट युवा-हिट युवा के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद द्वारा टपकेश्वरी मंदिर के समीप पहाड़ियों पर करीबन ६ किलोमीटर की ट्रेकिंग का आयोजन संपूर्ण तेरापंथ समाज के लिए किया गया। १२४ लोगों ने उपस्थिति दर्ज कराकर इस ट्रेकिंग की आयोजना को सफलतम बना दिया। ट्रेकिंग के क्षेत्र से जुड़े विनोदभाई मेहता एवं जैनम मेहता ने अपनी टीम के साथ सभी लोगों को गाइड किया।

सभा के मंत्री धनसुखभाई कुबड़िया, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष एवं उपासक नरेंद्रभाई मेहता, उपासक प्रभुभाई मेहता, महिला मंडल सहमंत्री प्रीति बहन दोशी, किशोर मंडल प्रभारी मितुल मेहता, स्नेहल मेहता, किशोर मंडल संयोजक यश दोशी, कन्या मंडल संयोजिका टिया बाबरिया, परिषद अध्यक्ष आशीष बाबरिया ने अपने विचार रखे। फिट युवा-हिट युवा के संयोजक आदर्श संघवी ने कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु आभार ज्ञापित किया।

फिट युवा-हिट युवा

हासन (कर्नाटक)।

फिट युवा-हिट युवा अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के अंतर्गत हासन तेयुप ने सकल श्वेतांबर समाज के लिए तेरापंथ सभा भवन से हासन के महाराजा पार्क में फिट युवा-फिट युवा का सफल आयोजन किया। जिसमें लगभग २५ युवकों ने भाग लिया। गौतम कोठारी ने व्यायाम, योग कराया एवं जीवन में फिट कैसे रहें इस पर अपने विचार व्यक्त किए।

इस कार्यक्रम का संयोजन नितेश सुराणा ने किया। हासन तेयुप के अध्यक्ष जितेंद्र गादिया, मंत्री गौरव गुलगुलिया, आदेश्वर मंडल के अध्यक्ष राजेश भंसाली की उपस्थिति रही।

कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला दीक्षांत समारोह

विजयनगर।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप, विजयनगर द्वारा ७ दिवसीय कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। सीपीएस कार्यशाला का शुभारंभ राष्ट्रीय महामंत्री पवन मांडोत की अध्यक्षता में हुआ। तेयुप अध्यक्ष अमित दक ने सभी का स्वागत किया। प्रथम दो दिवस में मनीषा सेठिया ने सभी को मंच पर खड़े होना, हाव-भाव, चेक लिस्ट आदि के बारे में विस्तार से बताया। अगले २ दिन अनिला सेठिया ने सभी प्रतिभागियों को स्वागत भाषण, आभार ज्ञापन, मुख्य वक्तव्य आदि के बारे में जानकारियाँ दी। अंतिम तीन दिन सीमा संचेती ने पिछले चार दिनों का पुनरावलोकन किया। पाँचवें दिन समुह बनाकर नाटक प्रस्तुति एवं वक्तव्य कला के गुर बताते हुए प्रस्तुति के लिए तैयार किया।

दीक्षांत समारोह

कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला के दीक्षांत समारोह का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। अभातेयुप महामंत्री पवन मांडोत ने कार्यक्रम की विधिवत शुरुआत की घोषणा की। विजयगीत का संगान विजय स्वर संगम के द्वारा किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र के वाचन के साथ कार्यक्रम शुरू हुआ। तेयुप अध्यक्ष अमित दक ने सभी का स्वागत किया। सभा अध्यक्ष राजेश चावत ने परिषद को बधाई दी। मुख्य प्रशिक्षक अरविंद मांडोत, सीमा संचेती ने अपने विचार व्यक्त किए। सीपीएस के राष्ट्रीय प्रभारी सतीश पोरवाड़ ने सभी प्रतिभागियों को बधाई देते हुए सभी के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना की।

मुख्य अतिथि अभातेयुप के प्रबुद्ध विचारक एवं प्रायोजक दिनेश पोखरणा ने वक्तव्य में सभी प्रतिभागियों एवं तेयुप, विजयनगर को इस महनीय आयोजन के लिए बधाई दी। अध्यक्ष अमित दक के नेतृत्व में कार्यशाला संयोजक गौरव चोपड़ा एवं सह-संयोजक दिनेश मेहता का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम में सीपीएस राष्ट्रीय प्रभारी सतीश पोरवाड़, तेरापंथ टाइम्स कार्यकारी संपादक दिनेश मरोठी, अभातेयुप साथी, परिषद संगठन मंत्री दीपक भूरा सहित परिषद पदाधिकारी, कार्यकारिणी सदस्यों की विशेष उपस्थिति रही।

अभातेयुप द्वारा सभी संभागियों को सीपीएस कार्यशाला प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। आभार मंत्री विकास बांठिया ने किया।

प्रभु महाश्रमण तुम मेरे अंतर के राम हो

● साध्वी प्रबुद्धयशा ●

अभी दवाई चल रही है

कार्तिक शुक्ला द्वितीया को आदरास्पद मुख्य नियोजिकाजी ने निवेदन किया—अभी मैं प्रायः महीने के छः उपवास करती हूँ। अब आगे प्रतिमाह सात उपवास करना चाहती हूँ। गुरुदेव ने जैसे ही स्वीकृति प्रदान की। साध्वी चंद्रिकाश्रीजी ने कहा—मेरी भी इच्छा है। मैं भी तिथियों का लक्ष्य बनाऊँ। गुरुदेव मुझे भी उपवास करवाओ।

आचार्यवर—कितने उपवास करना चाहती हो?

चंद्रिकाश्रीजी—गुरुदेव! जितने आप फरमाओ।

आचार्यवर—देखो, अभी तो तुम्हारे दवाई चल रही है।

मन में भावना रखो। फिर आगे कभी देखेंगे। पहले ठीक हो जाओ।

कर्जमुक्ति

एक दिन साध्वी चंद्रिकाश्रीजी ने गुरुदेव से प्रार्थना की—भंते! मेरी चाकरी बाकी है। मेरे ऊपर तीन साल की चाकरी का संघीय ऋण है। आप इतनी शक्ति दें मैं ठीक हो जाऊँ। और सबसे पहले चाकरी का ऋण उतार दूँ। पूज्यप्रवर—थांके मन में इंया भावना है कि मैं चाकरी करूँ। चंद्रिकाश्रीजी—तहत्।

आचार्यवर—तीनूं ही चाकरी लगातार कर लेस्यो।

चंद्रिकाश्रीजी—तहत् गुरुदेव! तीन ही क्यूं पूरी जिंदगी सेवां कर लेस्यूं। बस आपरी किरपा स्यूं ठीक हो ज्याऊं।

साध्वीप्रमुखाश्रीजी—गुरुदेव! बख्शीश करवाओ।

पूज्यप्रवर—अच्छा। मान लो थांने कोई सेवा केंद्र में कोई साध्वी की सेवा में राख देवां। ३०-४० वर्ष तक सेवा करनी पडे तो कर लेस्यो।

चंद्रिकाश्रीजी—तहत् गुरुदेव!

पूज्यप्रवर साध्वी चंद्रिकाश्रीजी की सेवाभावना से बहुत प्रसन्न हुए। फरमाया—थांरी भावना ने ही म्हें चाकरी माना। पूज्यप्रवर ने उनको तीन साल की चाकरी से मुक्त कर दिया। श्रीमद् राजचंद्र की तरह इनकी चाकरी का एग्रीमेंट फाड़ रहे हैं। कृपानिधान आचार्यवर ने कृपा बरसाते हुए ऐसे फरमाया।

साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने चंद्रिकाश्रीजी को कहा—इत्ती छोटी ऊमर में किनै बख्शीश मिलै। थे तो परम सौभाग्यशाली हो। गुरुदेव कित्ती महान कृपा करवाई है।

दो सूत्र

७ नवंबर को साध्वी सुमतिप्रभाजी ने निवेदन किया कल रात को अर्हत् वंदना के बाद साध्वी चंद्रिकाश्रीजी व्हीलचेयर से साध्वीप्रमुखाश्रीजी के पास गए। आचार्यप्रवर—अच्छा! (मनमोहक मुस्कान के साथ)—अब धीरे-धीरे एक कि०मी० चलने का प्रयास करो। चंद्रिकाश्रीजी—तहत् गुरुदेव।

आचार्यवर—देखो, दो सूत्र हैं तुम्हारे लिए।

पहला सूत्र—Visualization करना यानी देखना। जैसे मन में भावना रखो, मुझे ठीक होना है। मैं ठीक हो जाऊँ विहार करूँ। ऐसे देखो अपने आपको 'मैं साध्वीप्रमुखाश्रीजी के काफिले के साथ जयपुर, लाडनूं की ओर विहार कर रही हूँ। मेरे कंधों पर बोझ है। मैं प्रमुखाश्रीजी के साथ चल रही हूँ। बार-बार ऐसे देखो।

दूसरा सूत्र—'अनुप्रेक्षा करो, मुझे सेवा करनी है। लंबे काल तक साधना करनी है। संयम पालना है। साध्वियों की सेवा करनी है, औरों की सेवा करनी है।'

चंद्रिकाश्रीजी ने दोनों सूत्रों को दो बार उच्चरित किया। आचार्यप्रवर प्रसन्नता के साथ उनके मुख से सुन रहे थे।

साध्वीप्रमुखाश्रीजी—गुरुकृपा स्यूं संकल्प सफल हुवै।

चंद्रिकाश्रीजी—गुरुदेव अनंत कृपा करावै। बड़ा महाराज बहुत कृपा करावै। कोई शब्द नहीं है। कियां में कृतज्ञता ज्ञापित करूँ।

दूसरे दिन पुनः पूज्यवर ने दोनों सूत्र चंदिकाश्रीजी से बुलवाए। हम दिन में बार-बार उन्हें इन सूत्रों की अनुप्रेक्षा करवाते। वे बड़ी निष्ठा और भक्ति के साथ करती थी।

८०-८५ वर्ष तक जीना है

एक दिन आचार्यवर ने फरमाया—आं नै पाछा खड्या करना है। ए कियां ही खड्या हो ज्यावै। ठीक हो ज्यावै।

आचार्यवर—तुम संकल्प करो—'मुझे ठीक होना है। स्वस्थ होना है। खड़ा होना है। सेवा करनी है। ८०-८५ वर्ष तक जीना है। संध की सेवा करनी है। साधना करनी है।' पूज्यप्रवर की वाणी का प्रभाव। प्रेरणा का प्रभाव। वे उस रात्रि को लगभग १२:३० बजे साध्वी काम्यप्रभाजी व साध्वी हेमंतप्रभाजी जो पास में जग रही थी। उनसे कहा—मुझे नींद नहीं आ रही है।

दोनों ने कहा—गुरुदेव ने फरमाया है आपको खड़ा होना है। हम आपको फिजियोथैरेपी करवाते हैं। उन्होंने लगभग डेढ घंटे तक कोशिश की। और उस कोशिश में कामयाबी भी हासिल की। यह उनका मनोबल और गुरुवाणी का जादू था।

(क्रमशः)

✦ *आत्मा की दृष्टि से जो सेवा की जाती है, वह आध्यात्मिक सेवा है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

साधु के उपदेश से नैतिकता का जागरण हो सकता है : आचार्यश्री महाश्रमण

जैन विश्व भारती, १७ जनवरी, २०२२

कामधेनू प्रांगण से अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि अनेक प्रकार भौतिक संपदाएँ और आध्यात्मिक संपदाएँ होती है। शास्त्रों में आठ गणी संपदाओं का भी उल्लेख मिलता है। त्यागी-गणी उनकी भी संपदाएँ बताई गई हैं। वे संपदाएँ धर्म, ज्ञान और शरीर से जुड़ी हुई हो सकती है।

आप लोग जो गार्हस्थ्य जीवी हैं, आपकी भी संपदाएँ होती हैं। आर्थिक संपदा, पद-प्रतिष्ठा, ताकत-जनबल, शरीर बल और वाक् बल की संपदा भी हो सकती है। आप लोगों के जीवन में आध्यात्मिक संपदा के संदर्भ में त्याग संपदा भी हो सकती है। तपस्या, ज्ञान की संपदा हो सकती है।

जीवन में त्याग का बड़ा महत्त्व है। त्याग के संदर्भ में हम ईमानदारी को देखें। ईमानदारी अच्छी रखनी है तो आप गृहस्थों में भी कुछ त्याग की चेतना होती है तो वह ईमानदारी की संपदा अच्छी रह सकती है। ईमानदारी के लिए दो बातें हैं–चोरी नहीं करना और झूठ नहीं बोलना। सत्य और अचौर्य इन दो पहियों पर ईमानदारी का रथ टिका हुआ है। साधु के तो जीवन भर चोरी और झूठ का त्याग होता है।

गृहस्थ भी जीवन में चोरी न करने का जितने रूप में प्रयास हो, करें। दूसरे के हक की चीज छीन लेना अच्छी बात नहीं होती। टैक्स पूरा न देना भी चोरी है। साधु के उपदेश से ईमानदारी, नैतिकता की चेतना जागृत हो सकती है। साधु की वाणी का असर होता है। भारत या दुनिया का भाग्य है कि यहाँ तीर्थंकर व साधु हमेशा रहते हैं। आकाश और धरती के संवाद से समझाया कि धरती पर संतों के चरण कमल की रजें गिरती हैं। आध्यात्मिक संपदा है।

मैं अभी जैविभा में प्रवास कर रहा हूँ। इस जैविभा में आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी के चरण कमल टिके थे। कितना प्रवास, भ्रमण, विचरण किया था। कितने साधु-साध्वियाँ, समणियाँ, मुमुक्षु बहनें यहाँ रहते हैं। कितने-कितने आयाम चलते हैं। जैविभा जय कुंजर हैं। कामधेनू भी हैं। प्रज्ञालोक, सुधर्मा सभा है। योगक्षेम वर्ष भी हुआ था। जैन समाज का महत्त्वपूर्ण स्थान है। तुलसी अध्यात्म नीडम में कितने ध्यान के शिविर लगते थे।

जैन विश्व भारती एक तपोभूमि है। योगक्षेम वर्ष में मुख्य प्रवचन युवाचार्य महाप्रज्ञ जी का होता था, बाद में गुरुदेव तुलसी भी फरमाते थे। गुरुदेव तुलसी की कर्मभूमि बनी हुई है। यह एक सुरम्य स्थान है। ग्रंथागार, विश्वविद्यालय आदि कई संस्थान हैं। यहाँ हमारा भी बड़े अंतराल के बाद आना हुआ है। जैविभा का व हम सबका धार्मिक, आध्यात्मिक विकास होता रहे। इस संस्था के द्वारा धार्मिक-आध्यात्मिक अवदान भी दुनिया को दिए जाते रहें, मंगलकामना।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की कुछ कृतियाँ जैविभा के पदाधिकारियों द्वारा पूज्यप्रवर को अर्पित की गई। पूज्यप्रवर ने आशीवर्चन फरमाया कि चार पुस्तकें अंग्रेजी भाषा की लोकार्पित हुई हैं। गुरुदेव महाप्रज्ञजी एक मनीषी व्यक्तित्व थे। ध्यान योग से भी वो गहराई से जुड़े थे। उनमें एक विशेष वैदुष्य भी था। आगम संपादन में भी उनका योग रहा था। उनका स्वयं का भी अलग साहित्य था। जिन्होंने शारीरिक श्रम किया है, उनका योगदान रहा है।

इस प्रसंग पर मुख्य नियोजिकाजी जो आचार्य महाप्रज्ञ के वाङ्मय के संपादन से जुड़ी हैं, ने कहा कि जैविभा में पूज्यप्रवर का प्रवेश का दृश्य अनूठा था। यहाँ जो व्यक्ति आता है, उसे शांति की अनुभूति होती है। यहाँ से शिक्षा और साहित्य की प्रवृत्तियाँ चलती है। पूज्य गुरुदेव तुलसी स्वप्न दृष्टा थे। पूज्यप्रवर भी स्वप्न दृष्टा हैं। आपने महाप्रज्ञ शताब्दी पर फरमाया था कि आचार्य महाप्रज्ञ का साहित्य महाप्रज्ञ वाङ्मय के रूप में सामने आए। वह सामने आया है। २५ से भी ज्यादा पुस्तकें अंग्रेजी भाषा में सामने आई है। यह कार्य और आगे चलता रहे।

पूज्यप्रवर के जैविभा में स्वागत-अभिनंदन कार्यक्रम आज आयोजित हुआ। जैविभा के अध्यक्ष मनोज लुणिया ने अपनी भावना अभिव्यक्त करते हुए जैविभा की गतिविधियों एवं नूतन निर्माण कार्य की जानकारी दी। महामंत्री प्रमोद बैद, व्यवस्था समिति अध्यक्ष शांतिलाल बरमेचा स्वागताध्यक्ष राकेश कठोतिया, जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के कुलपति बच्छराज दुगड़, मुमुक्षु परिवार, समणीवृंद, उम्मेदसिंह बोकड़िया ने अपनी भावना व्यक्त की।

जैविभा द्वारा उम्मेदसिंह बोकड़िया (जिन्होंने महाश्रमण विहार का निर्माण करवाया है), रमेश बोहरा (जिन्होंने जयकुंजर का निर्माण करवाया है), राकेश कठोतिया (जिन्होंने जैविभा के मुख्य प्रवेश द्वार का निर्माण करवाया है), यूएसए निवासी स्वतंत्र जैन (जिन्होंने साहित्य सदनम् का निर्माण करवाया है) का सम्मान किया गया। कार्यक्रम के उपरांत आचार्यश्री जैन विश्व भारती परिसर में आचार्यश्री महाश्रमण षष्टिपूर्ति व साध्वीप्रमुखाश्रीजी के अमृत महोत्सव के संदर्भ में नवनिर्मित साहित्य सदनम् में पधारे। इस भव्य सदनम् का शुभारंभ आचार्यश्री के मंगलपाठ से हुआ। आदर्श साहित्य विभाग के संयोजक पुखराज बड़ोला व सह-संयोजक विजयराज आंचलिया ने भवन के विषय में अवगति दी। आचार्यश्री ने उसका अवलोकन करने के पश्चात पावन संबोध प्रदान करते हुए कहा कि यह साहित्य सदनम् साहित्य की संपूर्ण जानकारी व नव्यता-भव्यता के लिए प्रदर्शित हो रहा है। इससे साहित्य की विशेष खुराक मिलती रहे। बहिर्विहार से समागत साध्वीवृंद ने गुरुचरणों में हस्तनिर्मित कलाकृतियाँ भेंट की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि जैविभा अपने आपमें एक विशिष्ट शक्ति है।

समता की साधना से स्वयं को विप्रसन्न बना सकते हैं : आचार्यश्री महाश्रमण

जैन विश्व भारती, २० जनवरी, २०२२

आस्था के आस्थान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने महाश्रमण विहार में मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे भीतर कभी दुःख उभर जाता है, कभी आक्रोश का भाव भी आदमी में आ जाता है। कभी अहंकार का नाग फूँफकारने लगता है। कभी लोभ अपना नृत्य करने लग जाता है। कभी अवसाद की स्थिति, उदासीनता जैसे अनेक प्रसंग हमारे भीतर हो सकते हैं।

अब एक प्रश्न है कि कौन-सा वह तरीका है, जिससे चित्त हमारा विप्रसन्न रहे, प्रसन्न शब्द के मैं दो अर्थ करता हूँ। एक अर्थ है–खुश-हर्षित। दूसरा अर्थ है–निर्मल-स्वच्छ। शास्त्रकार ने कहा कि अपने आपको विशेष प्रसन्न बनाओ। उसका उपाय बताया–समता की प्रेक्षा-अभ्यास करके हम अपने आपको विशेष प्रसन्न बना सकते हैं।

परिस्थितियाँ अनुकूल-प्रतिकूल आ सकती हैं, हम उसके गुलाम न बनें। परवश न हों। समता इतनी संपुष्ट हो जाए कि कोई भी परिस्थिति आए, हमारी प्रसन्नता नष्ट नहीं हो सकती। समता छोटा सा शब्द है, पर इसकी प्रकृष्ट साधना मुश्किल से होती है। प्रशंसा में सुखी नहीं, निंदा में दुःखी नहीं बनें।

निंदा हो या प्रशंसा हमारा चित्त समभाव में रहे। कोई भी स्थिति आए हम प्रसन्न रहें, यह एक प्रसंग से समझाया कि तपस्या के बल से समस्या जा सकती है। एक आलंबन सूत्र है, यह भी बीत जाएगा, सुखी या दुःखी न बनें। सारी स्थितियाँ नश्वर है। अनित्यता का अनुचिंतन करें। मानसिक प्रसन्नता बनी रहे।

हमारा चित्त परिस्थिति से ज्यादा परेशान न हो। कार्य तो हमारे सामने आ जाता है, पर कारण भीतर सन्निहित रहता है। वर्तमान में कोरोना की स्थिति चल रही है। इसमें भी समता-अभय का भाव रखें। बचाव का प्रयास करें। समता एक ऐसा उपाय है जिसके द्वारा हम विप्रसन्न बन सकते हैं। मैत्री का भाव रखें। कलह में नहीं जाना। गुस्सा-आवेश में न जाएँ। दूसरों की सेवा-सहयोग करें।

हम दूसरों को उचित सुख-साता पहुँचाते रहें तो हमें भी प्रसन्नता मिल सकेगी। दूसरों को उदारता से दो। किसी ने कोई चीज माँग ली तो संभव हो सके तो उसे दे दो। चित्त प्रसन्न रह सकेगा। सुख-शांति मिल सकेगी। शास्त्रकार ने कहा है कि अपने आपको विप्रसन्न करो। निर्मल-स्वच्छ बनाओ, समता की साधना करो। चित्त निर्मल बन जाएगा। प्रसन्नता रह सकेगी।

समता के इस छोटे सूत्र में इतनी प्राणवत्ता होती है। छोटे सूत्र का अभ्यास हो जाए। जितना अभ्यास बढ़ता है, हम गति-प्रगति की दिशा में भी आगे बढ़ सकते हैं।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में साध्वी कनकश्रीजी, साध्वी लावण्यश्री जी, साध्वी प्रणवप्रभाजी, साध्वी चांदकुमारी जी, साध्वी प्रांशुप्रभाजी, साध्वी पुण्यप्रभाजी, साध्वी प्रतिभाश्री जी, साध्वी सुमनश्री जी आदि साध्वियों ने गीत व वक्तव्य के द्वारा अपनी भावना व्यक्त की।

इस दौरान आचार्यश्री के दर्शनार्थ उपस्थित जैन भारती मान्य विश्वविद्यालय की कुलाधिपति सावित्री जिंदल ने भी पूज्यप्रवर के दर्शन कर अपनी भावनाओं को श्रीचरणों में रखा तो आचार्यश्री ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय तथा स्वयं का भी निरंतर विकास होता रहे। मंगल प्रवचन के कुछ समय पश्चात आचार्यश्री मान्य विश्वविद्यालय एवं कालू कन्या महाविद्यालय के अवलोकन हेतु भी पधारे। कुलाधिपति सावित्री जिंदल, कुलपति बच्छराज दुगड़, डायरेक्टर आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने आचार्यप्रवर को गतिविधियों की जानकारी देते हुए परिसर की अवगति दी। इस दौरान विद्यार्थियों व शिक्षण कार्य से जुड़े लोगों को पूज्यप्रवर के दर्शन और मंगल आशीर्वाद से लाभान्वित होने का सौभाग्य प्राप्त हो गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अहिंसा की प्रतिष्ठा स्वयं में हो जाए तो वैर-भाव...

(पृष्ठ १५ का शेष)

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में मुनि विमल कुमार जी, मुनि तन्मय कुमार जी, मुनि स्वस्तिक कुमार जी, मुनि सुमति कुमार जी, मुनि अमृत कुमार जी, साध्वी भव्ययशा जी, साध्वी मर्यादाप्रभा जी ने अपने भाव व्यक्त किए।

जैन विश्व भारती संस्थान के स्वर्ण जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में जैविभा के इतिहास 'कामधेनु' ग्रंथ का संस्थान के मुख्य न्यासी अमरचंद लुंकड़, अध्यक्ष मनोज लुणिया आदि पदाधिकारियों ने गुरुचरणों में भेंट कर विमोचन किया। जैविभा मान्य विश्वविद्याय की ओर से कुलपति बच्छराज दुगड़ आदि ने 'आचार्य महाश्रमण विविध आयाम' पुस्तक आचार्यश्री को भेंट की। प्रो० रामप्रकाश द्विवेदी ने इस संदर्भ में अपने विचार रखे। 'कैरियर मंत्र' पत्रिका के विशेषांक का भी संपादक शंकर आकाश, मुकुल आकाश ने पूज्यप्रवर के समक्ष विमोचन किया।

जैन विश्व भारती परिसर अवलोकन के अंतर्गत शनिवार को आचार्यश्री महाश्रमणजी के चरणरज से निर्माणाधीन आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल कॉलेज एवं नेचुरोपैथी सेंटर पावन हुआ। मान्य विश्वविद्यालय के कुलपति बच्छराज दुगड़ ने परिसर के संदर्भ में अवगति प्रदान की। आचार्यश्री ने विमल विद्या विहार स्कूल के सामने स्कूल के प्रिंसिपल एवं प्रबंधकों को पावन प्रेरणा प्रदान की। इस दौरान आचार्य निर्माणाधीन 'संपोषणम्' को भी पावन बनाया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

त्रिदिवसीय आचार्यश्री भारमल महाप्रयाण द्विशताब्दी समारोह का शुभारंभ

आचार्य भारमल जी तेरापंथ धर्मसंघ के द्वितीय ही नहीं अपितु अद्वितीय आचार्य थे : आचार्यश्री महाश्रमण

जैन विश्व भारती, २३ जनवरी, २०२२

तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु के पट्टधर, द्वितीय आचार्यश्री भारमलजी का द्विशताब्दी महाप्रयाण दिवस-माघ कृष्णा अष्टमी। आज से लगभग २०० वर्ष पूर्व आचार्यश्री भारमलजी का महाप्रयाण राजनगर में हुआ था। आचार्य भिक्षु और युवाचार्य भारमल जी को वीर-गोयम की जोड़ी से उपमित किया गया है। भिक्षु और भारमल दो शरीर और एक आत्मा थे।

पूज्य भारमल जी स्वामी ने दीक्षा भी मुनि भीखण जी से ग्रहण की थी। तब से लेकर अंत तक वे पूज्य आचार्य भिक्षु से जुड़े रहे। लगभग २८ वर्ष का युवाचार्य काल और साढ़े अठारह वर्ष का आचार्य काल रहा। लगभग ६५ वर्षों से साधिक आपका संयम पर्याय रहा। आपके शासन काल में ८२ दीक्षाएँ (३८ साधु ४४ साध्वियाँ) हुई। इस महाप्रयाण द्विशताब्दी अवसर पर पूज्यप्रवर आचार्यश्री भारमल जी को शत-शत वंदन व भावांजली।

आचार्य भारमलजी महाप्रयाण द्विशताब्दी के अवसर पर तेरापंथ के एकादशम पट्टधर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन शासन में नमस्कार महामंत्र बहुत ही श्रद्धा भाव के साथ जपा जाता है या प्रतिष्ठित है। पाँच पदों से संवृहित यह महामंत्र है। इसमें मध्यस्थ नमो आयरियाणं है। तीसरा पद आचार्य का होता है। मानो कि ऊपर के दो पद संरक्षण देने वाले होते हैं, आगे के दो पद आचार्यों का सहयोग करने वाले हैं।

जैन शासन में आचार्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जब उस स्थिति में अर्हत यहाँ विराजमान नहीं है। जैन श्वेतांबर तेरापंथ में तो आचार्य का और वह भी वर्तमान समय में आचार्य का स्थान बड़ा गरिमापूर्ण और विशिष्ट सम्मान युक्त होता है। हमारे धर्मसंघ में तो आचार्य नियंता होते हैं। नियामक, नियंत्रक और अनुशासक होते हैं। हमारे इस विशाल धर्मसंघ में सर्वोच्च पूज्य और सर्वोच्च आदेश पाल्य होता है, वे अति अनिवार्यरूपेण आचार्य होते हैं।

आगम में भी आचार्य को बहुत महत्त्व दिया गया है। आचार के रूप में दिशा-निर्देश देने वाले, स्वयं आचार का पालन करने वाले आचार्य होते हैं। आज हम तेरापंथ के द्वितीय आचार्य परमपूज्य, परम श्रद्धेय, परम वंदनीय आचार्यश्री भारमल जी का महाप्रयाण द्विशताब्दी का त्रि-दिवसीय कार्यक्रम प्रारंभ कर चुके हैं।

आचार्य भारमलजी द्वितीय आचार्य थे, कुछ संदर्भों में, मैं कहना चाहूँगा कि वे अद्वितीय आचार्य थे। हमारे धर्मसंघ के प्रथम आचार्य भिक्षु स्वामी थे, उनके अनंतर पट्टधर एकमात्र भारमलजी स्वामी थे। बाकी के सारे आचार्य परंपर हैं। तेरापंथ के प्रथम युवाचार्य भारमलजी स्वामी थे। सर्वाधिक युवाचार्य काल भोगने वाले वे एकमात्र थे।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने मुझे भारमलजी के रूप में देखा है, यह उनकी कृपा मानूँ। तो मैं उनको आचार्य भिक्षु के रूप में देख लूँ। आज हम जिस महापुरुष की महाप्रयाण द्विशताब्दी मना रहे हैं, वे हमारे द्वितीय ही नहीं, कुछ संदर्भों में अद्वितीय आचार्य हैं।

आचार्यश्री भारमलजी में निर्भीकता का भाव इतिहास बताता है। केलवा के प्रथम चातुर्मास के संदर्भ में विस्तार से समझाया। बाल मुनि में अभय का भाव था। उनके लिए भिक्षु स्वामी ने जो एक प्रयोग किया वो प्रयोग हमारे इतिहास का प्रसंग है कि कोई गृहस्थ तुम्हारी गलती निकाल दे तो तुम्हें तेला करना। उन्होंने उसे भी शिरोधार्य किया। इतिहास बताता है कि इस तरह दंड के रूप में उन्हें कभी तेला नहीं करना पड़ा। हम चारित्रात्माएँ भी उनसे प्रेरणा लें।

ईर्या समिति में हरियाली–काई आ जाए तो हम बचने का प्रयास करें। हमारे में भी निर्भीकता का भाव बढ़ता रहे। हमारे में उनके जीवन के प्रसंग हमारे जीवन को प्रेरणा देने वाले बन जाएँ। उन्होंने कितने ग्रंथों की प्रतिलिपियाँ की थी। आचार्य भिक्षु के साहित्य का प्रमाण है। मैं बहुत ही श्रद्धा-सम्मान के भाव के साथ भावों का अर्पण उनके प्रति कर रहा हूँ। मुख्य मूल दिन उनका परसों है, उसे हम आध्यात्मिकता, त्याग-तपस्या से मनाने का प्रयास करें। जप करना हो तो 'मंगल भारमल्लक' का जप करें।

जैविभा में आज से हमारा अष्टाह्निक महोत्सव शुरू हो गया है। वर्धमान महोत्सव, दीक्षा महोत्सव उसी में शामिल है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में मुनि देवेंद्र कुमार जी ने अपनी भावपूर्ण अभिव्यक्त दी। पूज्यप्रवर ने मंगल आशीर्वचन फरमाया।

आचार्य भारमलजी द्विशताब्दी समारोह पर स्थानीय महिला मंडल, कन्या मंडल, तेयुप, व्यवस्था समिति अध्यक्ष शांतिलाल बरमेचा, मुमुक्षु बहनों एवं समणीवृंद ने गीत व भावों से अपनी भावांजली दी।

मुमुक्षु राजुल ने अपनी भावना पूज्य चरणों में अर्पित की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने करते हुए बताया कि पूज्य आचार्यप्रवर वर्तमान के भारमलजी स्वामी हैं।

अहिंसा की प्रतिष्ठा स्वयं में हो जाए तो वैर-भाव शांत हो जाते हैं : आचार्यश्री महाश्रमण

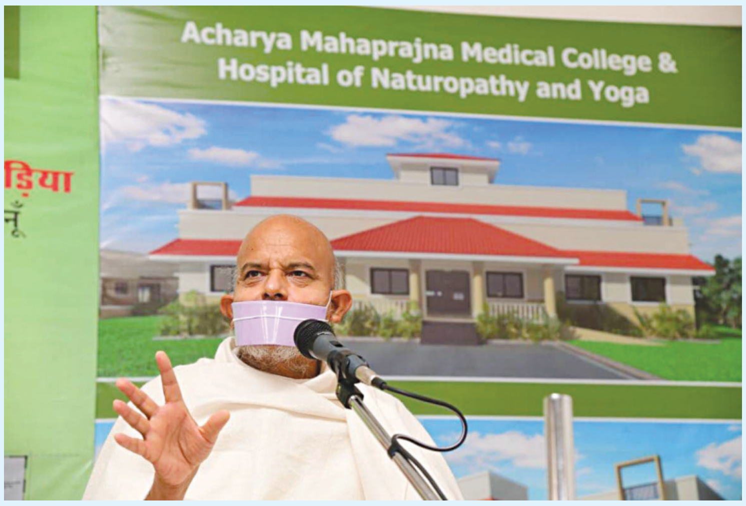

जैन विश्व भारती, २२ जनवरी, २०२२

तेरापंथ के वर्तमान सरताज आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्रकार ने कहा है कि स्वयं आत्मना सत्य खोजें, दूसरा निर्देश है–प्राणियों के प्रति मैत्री का प्रयोग करें। सत्य की खोज के लिए अनाग्रह का भाव अपेक्षित होता है।

आग्रह एक प्रकार का आवरण होता है। शोध करने का भाव हो तो सत्य प्रगट हो सकता है। सत्य को जान लेना अच्छी बात है। सत्य के साथ मैत्री भी हो। साधु में तो मैत्री का भाव होना ही चाहिए। मैत्री भाव होता है तो आदमी हिंसा से विरत रह सकता है। क्षमा का भाव मैत्री के लिए अपेक्षित होता है। जहाँ अक्षमा-आक्रोश का भाव है, वहाँ मैत्री की सुवास दूर हो जाती है।

संत हो और अशांत हो तो बात ठीक नहीं। संत वह होता है, जो शांत होता है। संत के चेहरे पर आक्रोश की रेखा ओपती नहीं है। विरोध करने वाले के प्रति भी मैत्री का भाव रहना चाहिए। गुरुदेव तुलसी के सामने कितनी विरोध की घटनाएँ आई थीं। विरोध में व्यक्ति दुःखी न हो, डरे भी नहीं। विरोध में तीन बातों से बचना चाहिए। न तो गुस्सा करना, न डरना, न दुःखी बनना। शांति, अभय और प्रसन्नता–ये तीनों रहें, तो विरोध विनोद बन सकता है।

विरोध होता है, वो कमियाँ आदमी में है, तो वह उनका परिष्कार करे। काम की बात ले लो, फालतू बात को छोड़ दो। यह एक प्रसंग से समझाया कि दिमाग को भारी करने की अपेक्षा नहीं है। स्पष्टीकरण भी करना जरूरी नहीं है। अपने अच्छे कार्यों से जबाव दो तो आज जो निंदा करता है, वो कभी प्रशंसक बन सकता है। कार्य अच्छा होगा तो निंदा करने वालों का मुँह बंद हो सकता है। हमारा आपस में मैत्रीपूर्ण व्यवहार रहे। कभी सहन करना पड़ सकता है।

मैत्री के लिए रुकना-झुकना जो भी उचित लगे कर लेना चाहिए। गुरु के सामने तो शिष्य शिष्य ही रहता है। जहाँ समूह में रहते हैं, वहाँ मैत्री का भाव हो। गुरुकुलवास में बहिर्विहारी आते हैं, तो कितना सुंदर माहौल बन जाता है। मैत्री का भाव हमारी आत्मा के लिए भी अच्छा है और संघ के लिए भी अच्छा होता है।

प्रतिकूल के साथ मैत्री रखना विशेष बात है। अहिंसा की प्रतिष्ठा स्वयं में हो जाती है, तो सामने वाले का वैरभाव शांत हो सकता है। सत्य और मैत्री दोनों तत्त्व बड़े काम के होते हैं। शोध से प्रबोध-संबोध, उद्बोधन हो सकता है। निष्पक्ष शोध हो। ये दृष्टिकोण हो तो सच्चाई प्रगट हो सकती है। स्वागत-परमत के आग्रह से दूर रहकर सत्य की शोध हो। स्वयं सत्य खोजें, सबके साथ मैत्री रखें। आगम वाणी का स्वाध्याय, उपयोग करते रहें, यह काम्य है।

(शेष पृष्ठ १४ पर)

✦ ध्यान व जप करना साधना है तो मेरा चिंतन है हर क्रिया में समत्व का अभ्यास रहे तो चलना, बोलना, लिखना आदि भी साधना हो सकती है।

—आचार्यश्री महाश्रमण

जैन विश्व भारती, लाडनूं

चित्रमय झलकियाँ

@साहित्य सदनम्

@जैन विश्व भारती प्रवेश

@महाश्रमण विहार उद्घाटन

@आचार्य तुलसी अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र

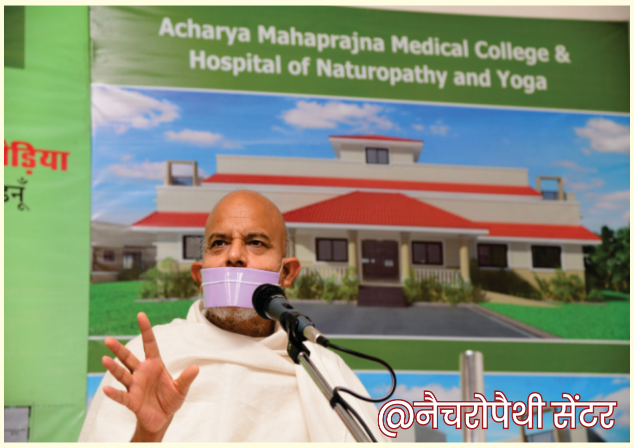

@नैचरोपैथी सेंटर

@आचार्य तुलसी स्मारक स्थल

@भाईजी महाराज समाधि स्थल

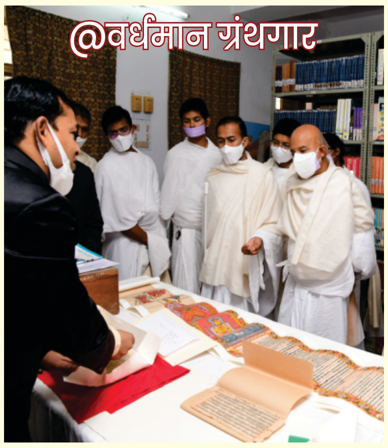
@वर्धमान ग्रंथगार

@JVBI

@फिजियोथेरेपी सेंटर

@पारमार्थिक शिक्षण संस्थान

@युवालोक

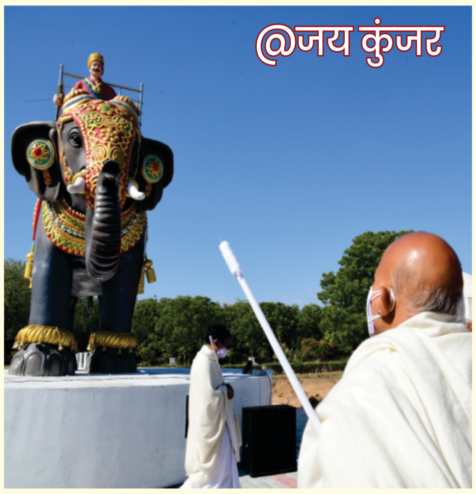
@जय कुंजर

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **संदीप कोठारी** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**